5 प्राकृत साहित्य के इतिहास का परिचय

मानव जीवन के दैनिक उपयोग की विविध सामग्रियों पर जो अंकन है वह प्राकृत विदों की दृष्टि से बोलचाल की भाषा में है जिससे सिन्धुजनों को भाषा कहा गया जो जन सामान्य का प्रचलित भाषा है। प्राकृत भाषा के प्रयोग जन–जन में प्रचलित शब्द है जिन्हें साहित्यकारों ने पूर्व में छान्दस कहा इसके अनन्तर साहित्यिक दृष्टि से इसका विभाजन किया तदनुसार लौकिक संस्कृति और साहित्य प्राकृत दोनों ही गतिशील बने रहे। उसी क्रम से जनभाषा ने विकास किया जो अपभ्रंश स्वरूप को प्राप्त हुई। विकासक्रम के विविध सोपानों से भाषाओं का वर्गीकरण किया गया विश्व की दो ढाई सौ परिवार की भाषाएं बारह प्रकार के परिवार के नाम से प्रचलित हुई। भारोपीय परिवार, सैमेटिक परिवार के नाम से प्रचलित हुई। भारोपीय परिवार, सेमेटिक परिवार से लेकर शेष परिवार के भी उपपरिवार सामने आये।

प्राकृत भाषा का संबंध – भारोपीय परिवार एक समृद्ध परिवार माना गया, उसी परिवार से भारोपीय परिवार का विविध रूपों में विकास हुआ। प्राकृत भाषा भारोपीय परिवार का ही अंग है।

उपपरिवार – प्राकृत भाषा आर्य उपपरिवार की शाखा में समाहित है। भाषा वैज्ञानिकों ने उपपरिवार के तीन विभाग किये।

(क) ईरानी शाखा परिवार

(ख) दरद शाखा परिवार

(ग) भारतीय आर्य शाखभारतीय आर्यशाखा परिवार के विकासक्रम को तीन कालों मे विभक्त किया गया।

- प्राचीन भारतीय आर्य भाषा काल – 1600 ई.पू. 600 ई.पू.
- मध्यकालीन आर्यभाषा काल – 600 ई.पू. 1000ई.
- आधुनिक आर्यभाषा काल

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाकाल वैदिक युग से संबंध रखता है। इस युग में जनभाषा के प्रयोग होने के कारण वैदिक भाषा को छान्दस या वैदिक संस्कृत कहा गया।

मध्यकालीन आर्यभाषा काल का विकास एक नये रूप को लेकर अस्तित्व में आया जिसे प्राकृतों का अस्तित्व कहा गया। वैदिक बोलियों के साथ जिसका संबंध था। धीरे–धीरे छान्दस ने प्रकृति को स्वीकार किया। प्राकृतों से वेद की साहित्यिक भाषा का विकास हुआ। प्राकृतों से संस्कृत का विकास भी हुआ और इनके अपने साहित्यिक रूप भी विकसित हुए।?

विद्वान मनीषियों ने प्राकृत में जनभाषा की विशेषता होने के कारण उसे जनसाधारण की भाषा कहा। मूल प्राकृत जनता की भाषा है। इसकी जड़े जनता की बोलियों के भीतर समाहित हुई और इनके मुख्य तत्त्व आदिकाल में जीती जागती और बोली जाने बाली भाषा से लिए गये है। छान्दस का विकास जिस प्रादेशिक भाषा से होता है उसी प्रादेशिक भाषा से प्राकृत भी विकसित होती है।

मूल समस्या – प्राकृत का स्वतंत्र अस्तित्व काव्य और साहित्य निबद्ध प्राकृत की धारा से होता है जिसे तीन युगों में बाँटा गया–

(क) मध्ययुग – प्रथम युग की प्राकृत जिसे आर्ष कहा गया। उसको भी साहित्यिक दृष्टि से निम्न भागों में विभक्त किया गया है।

- शिलालेखी प्राकृत – प्राचीन अभिलेख जो शिलाओं पर अंकित है।
- धम्मपद की प्राकृत–
- आर्ष प्राकृत – पालि, शौरसेनी और अर्द्धमागधी।
- प्राचीन सूत्रों की प्राकृत–आर्ष भाषा में लिखे गये पालि, शौरसेनी और अर्द्धमागधी भाषा के सूत्र।

• अश्वघोष के नाटको की प्राकृत–

मध्ययुग की प्राकृतें – युग के अनुसार सूत्र ग्रंथों की रचना हुई। इसके पश्चात् कवियों ने काव्यात्मक सृजन किया वह सृजन साहित्यिक सृजन या काव्य सृजन एक और जहाँ गाथा छन्द के माधुर्य से युक्त है वहां साहित्यिक रस परिपूर्ण अलंकृत एवं विविध छन्दों से महापुरूषों के चरित्र की कथावस्तु में जो गीत–प्रगीत आदि की बहुलता से अनुशासित हुई हैं वे प्राकृतें जनचेतना प्रदान करती है। उन्हीं के कारण काव्य का प्रारंभिक स्वरूप विकसित होते होते एक विशाल साहित्यिक परम्परा के सौन्दर्य को लिए हुए ई. 200 से 600 ई. तक प्रगति प्रदान करता रहा है जो विविध चरणों से शताब्दियों बाद भी 20वीं शताब्दी के अंतिम पडाव में कुछ सांस ले पाया और 21 वीं शताब्दी के प्रवेश में साहित्यिक क्षितिज पर प्राकृत साहित्य के काव्य में अनेक सृजन ने इसक स्थायित्व को महत्त्व दिया। 20वीं के अंतिम पड़ाव में अष्टक, शतक, खण्डकाव्य, एवं महाकाव्य भी लिखे गये और 21 वीं शताब्दी में भी प्राकृत का माधुर्य विद्यमान है।

मध्ययुग प्राकृत में निम्न प्राकृतें महत्त्वपूर्ण हैं–

- भास और कालिदास के नाटकों में प्राकृत
- गीतिकाव्य और महाकाव्यों की प्राकृत
- जैन काव्य साहित्य की प्राकृत
- प्राकृत वैयाकरणों द्वारा अनुशासित प्राकृतें
- वृहद् कथा की पैशाची प्राकृत

प्राकृत लोककल्याण के भावों को लेकर जन–जन तक के सूत्रों से जुड़ती गई। अभिलेख, शिलालेख, आदि ने इसके अस्तित्व प्रदान किया। सम्राट अशोक, नरेश खारवेल आदि अनेक शासकों ने सम्पूर्ण भारत में जो गुफाओं, पर्वत, कन्दराओं, सार्वजनिक, स्थलों, बाबड़ियों, कूपों, स्तम्भो आदि के साथ'–साथ मूर्ति, शिल्पमय जो कुछ भी विधान किया वह प्राकृत के सूत्रों, सूक्तियों या शिक्षाओं से संबंध रखता है।

प्राकृत प्रवेश और हमारा स्वाध्याय– यह सर्व विदित है कि अर्थ रूप में जो कुछ कहा गया वह अर्हंत भाषित है। उनकी ध्वनि दिव्यध्वनि मानी गई। जिसे प्रत्येक प्राणी जीव जगत् के मनुष्यदेव, पशु–पक्षी आदि अपनी–अपनी भाषा में समझते थे। दिव्यध्वनि के दिव्य आलाके में सम्पूर्ण ज्ञान समाहित था। इसमें भूगोल, गणित, इतिहास, ज्योतिष, खगोल, रस, रसायन, भूविज्ञान, लोक–अलोक विज्ञान, तत्त्वविज्ञान, कर्मविज्ञान, ज्ञान रहस्य एवं दर्शन के विविध आयाम विद्यमान थे जिन्हें गणधरों ने विविवत् समस्त विश्वज्ञान को ग्रहण किया और विधिवत् सूत्रबद्ध कर दिया।

सूत्र में जो कुछ भी निहित है वह सब सर्वज्ञ कथित है। सर्वज्ञ की वाणी में किसी प्रकार का भी विरोध नहीं होता उनके कथन में समभाव के साथ–साथ सभी प्रकार का अनुचिंतन समाहित होता है। वे सम्पूर्ण विश्व के समस्त पदार्थों को एक साथ एक ही समय में अपने ज्ञान में आलोकित कर लेते है अर्थात् एक साथ एक ही समय दर्पण की तरह समस्त बस्तुएं उनके ज्ञानमय दिखने लगती है। उनका ज्ञान पूर्ण ज्ञान कहलाता है। जिसे केवलज्ञान कहा गया।

महामंत्र से लेकर अब तक की प्राकृत यात्रा– अनादि मूलमंत्र, महामंत्र, नमस्कार मंत्र का हमारे जीवन से पूर्ण संबंध रखता है। यह प्राकृत में किसी व्यक्ति विशेष के गुणों को व्यक्त नहीं करता अपितु यह अर्हंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु के मंगल स्वरूप को व्यक्त करता है। मंगल यात्रा मं अर्हंत, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म के भाव समाहित है। हम चत्त्वारि मंगलं का पाठ पढ़ते है। सामायिक और प्रतिक्रमण के क्षणों में मंगलमंत्र अनेक बार पढ़ा जाता है। लोगस्स का पाठ चतुविंशति पाठ है।जिसमें हम बोलते है–सिद्ध सिद्धि मम दिशन्तु और यह भी कामना करते है कि जो भी आरंभ, समारंभ किया जाता है करवाया जाता है। या करते हुए का अनुमोदन किया जाता है। वह सब ऐसा कथन है। जिसमें सम्पूर्ण जीव जगत् के लोक कल्याण की भावना रहती है। 'प्राणातिपात वे रमणं' वास्तव में जगत् के जीव प्राण सत्त्व आदि को स्थायित्व देते हैं। इसी तरह इसके जितने भी पाठ है वे प्राकृत की प्रकृति से जुड़े हुए एकेन्द्रिय जीवों से लेकर पंचेन्द्रिय जीव जगत् के लिए जीने का पाठ पढाते है।

हमारे अंग, उपांग आदि सूत्र ग्रन्थ साहित्य षट्खण्डागम, कषायपाहुड, धवला, महाधवला, पंचास्तिकाय, समयसार, नियमसार, प्रवचनसार, अष्टपाहुड, तिलोयपण्णत्ति, द्रव्यसंग्रह, गोम्मटसार, जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, अनुप्रेक्षा, भगवती आराधना, मूलाचार, सन्मति सूत्र एवं अनेक महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथाकाव्य,आदि प्राकृत के काव्य जनसाधारण के जीवन जीने के कलात्मक एवं आत्मस्वरूप के मार्ग की ओर ले जाने वाले काव्य हैं।

आओ हम विचार करें प्राकृत प्रवेश के विषय पर जिन्होंने सूत्रों दिये और काव्य भी रसपूर्ण प्रदान किये। विचारणीय तथ्य यह है कि आचार्य शांतिसागर ने अपने जीवन में श्रमणचर्या के सूत्रों को अपने से जोड़ा प्रत्येक पाठ के प्रतिक्रमण में प्राकृत के जो भाव थे वे अर्हत् भक्ति, सिद्ध भक्ति, तीर्थंकर भक्ति, श्रुतभक्ति, आचार्य भक्ति आदि जिस रूप में थे उसे गले का आभूषण बनाया। प्रत्येक साधु प्रतिक्रमण के पठन में प्राकृत की गौरव गाथा को स्वीकार करता है जो परंपरा शांतिसागर की है उसके सभी आचार्य मुनि–प्रतिक्रमण करते है और उसमें प्राकृत में लिखे सूत्रों को ही पढ़ते है। स्वाध्याय के क्रम में कोई भी ऐसा संघ नहीं है जो पूर्व आचार्य परम्परा के प्राकृत ग्रंथों को अपनी वाचना का आधार न बनाता हो वह द्रव्य संग्रह के छोटे से ग्रंथ की ग्रन्थियों में संपूर्ण तत्त्व के रहस्य को जानने का प्रयत्न करता है। आाचार्य कुन्दकुन्द के आत्मचिंतन को कितने ही बार सूत्रगत करता है, कण्डगत् करता है और उन्हें विधिवत् वाचना, प्रक्षना, आम्नाय आदि के स्वाध्याय के क्रम में स्थित होकर ही बार–बार आलोडन विलोडन करता है। जीव, आत्मा आदि के विषय में प्रवेश सहज एवं सरल नहीं है। उनके सूत्र के आलोडन–विलोडन में जितना प्रवेश करते है उतना ही रहस्य देखने को मिलता है।

आचार्य देशभूषण, आचार्य ज्ञानसागर,आचार्य शिवसागर, आचार्य वीरसागर, आचार्य अजितसागर,आचार्य वर्धमानसागार, आचार्य विद्यासागर, आचार्य सन्मति सागर, आचार्य देवनन्दी, आचार्य विरागसागर, आचार्य सुनील सागर, प्रणम्यसागर, विमर्शसागर आदि जिनशासन के महत्त्व पर प्रकाश डालने से पूर्व इनका अनुचिंतन किया है और आधुनिक समय में प्राकृत के विकास में मुनि भगवंत एवं मनीषी विद्वान् अपना योगदान दे रहे हैं।

आचार्य जवाहर, आचार्य नानेश, आचार्य हस्तीमल, आचार्य महाप्रज्ञ, आचार्य जिनप्रभसूर्य आदि अनेक मनीषी विचारक प्राकृत की महती प्रभावना हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे हैं।

प्रत्येक संज्ञ के साधु साध्वी के जीवन में प्राकृत की प्रकृति होती है। वे सभी प्रारंभ से लेकर अंत तक श्रुत के विषय को प्राप्त करने के लिए द्रव्यानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और प्रथमानुयोग के तात्विक चिंतन में रमे रहते हैं। आचार्य, उपाध्याय,साधु या साध्वियाँ, मुनि, आर्यिकाएं प्रत्येक स्थल पर जो भी गाथाएं बोलते है या जो भी विषय प्रतिपादित करते है उनके मूल में प्राकृत के प्रगेय तत्त्व विद्यमान रहते है। सामायिक, चतुर्विंशति, स्तवन, वन्दना, प्रतिक्रमण या ध्यान आदि की अवस्था में जो कुछ भी पढ़ा या सुना जाता है वह श्रुत केवलियों के प्रणीत सूत्र के प्रामाणिक सूत्र ही होते है जो अमृततत्व को प्रदान करते हैं।

प्राकृत की प्रकृति पर स्थित आचार्य ––

प्राकृत के प्रारंभिक चरण में प्रवेश करते हैं तो स्वतः ही बुद्धि उस तन्त्र पर चली जाती है जिसने सर्वप्रथम प्राकृत सूत्र लिखते हुए नमोकार मंत्र को अपने सूत्र ग्रंथों में सर्वप्रथम स्थान दिया। प्राचीन समय में जैनाचार्यों ने जो अनुपम कार्य किया वह 2000 वर्ष तक निरन्तर चलता रहा और अब भी चलता जा रहा है। राष्ट्रसंत प्राकृतप्रेमी एवं विश्वधर्म के क्षितिज पर कीर्तिमान स्थापित करने वाले आचार्य शांतिसागार की परम्परा के आचार्य विद्यानंद ने अपने विद्या के आनंद में प्रवेश प्रकृति के मूल से ही प्राप्त किया। वे प्रारंभिक चरण में आचार्य शांतिसागर के आश्रय में प्राकृत के जिन सूत्रों को कण्ठस्थ करते थे उन्हीं सूत्रों को इस शेडवाल, कर्नाटक के अप्रेल 1925 में जन्में उपाध्याय के रूप में क्षुल्लक पार्श्वकीर्ति वर्णी बनकर प्राकृत के साहित्य एवं व्याकरण को विधिवत् पढ़ा उसे जीवन में उतारा उनकी लम्बी यात्रा में प्राकृत ही प्रवेश कर गई थी जिसे साकार रूप देने के लिए अनेक प्रयत्न किये उन्होंने साधक जीवन से जिस प्राकृत शिक्षण को प्राप्त किया था। उस प्राकृत शिक्षण को 1979 में जीवन्तरूप प्रदान किया 1988 में आचार्य कुन्दकुन्द की द्विसहस्त्राब्दि वर्ष ने प्राकृत को परिशीलन की ओर उन्मुख किया।

प्राकृत दिवस – ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी सन् 1995 के प्राकृत आयोजन को प्राकृत भाषा के दिवस के रूप में मनाया गया। आचार्य विद्यानंद के ऐतिहासिक निर्णय ने हमारे श्रुत जो प्राकृत में ही है। उस श्रुत परम्परा को श्रुतपंचमी अर्थात् ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी को प्राकृत दिवस के रूप में पहिचान मिली। आचार्य विद्यानंद के प्रयास से प्राकृत का प्रतिनिधित्व करने वाली प्राकृत विद्या, कुन्दकुन्द भारती, अखिल भारती शौरसेनी प्राकृत संसद, प्राकृत गोष्ठी प्राकृत कवि सम्मेलन, प्राकृत व्याख्यानमाला, प्राकृत पुरस्कार, प्राकृत भाषा विभाग स्थापना, प्राकृत शिक्षण आदि के साथ–साथ सम्राट खारवेल के प्राकृत में जीवन को इस महामना आचार्य विद्यानंद के द्वारा इतिहास को भी जीवन्त बना दिया। प्राचीन इतिहास के क्षेत्र में खारवेल पुरस्कार ने प्राकृत गौरव को ही नहीं बढ़ाया अपितु सम्राट खारवेल, सम्राट अशोक एवं अनेक ऐतिहासिक प्राकृत प्रेमियों से लेकर अब तक के अनेकानेक प्रयास आचार्य मुनि विद्यानंद को प्राकृत भाषा एवं संस्कृति का जीवन्त सृष्टा और दृष्टा कहे जाने में किसी तरह का संकोच नहीं हो रहा है।

प्राकृत–आगम–साहित्य –(आगम ग्रन्थ)

आप्तवचन का नाम आगम है। जिन्हें श्रुत, सूत्र, ग्रंथ, सिद्धान्त, वचन, सर्वज्ञवाणी, ईश्वर–ज्ञान–विज्ञान, उपदेश एवं प्ररूपणा कहते हैं। ''आसमन्ताद् गम्यते वस्तुतत्त्वमनेनेत्यागमः'' जिससे सम्पूर्ण वस्तु–तत्त्व का बोध हो वे आगम हैं।

आगम–वाचना – अंतिम तीर्थंकर महावीर के पश्चात् 160 वर्ष विविध वाचनाओं के माध्यम से संकलित किया गया।

1. प्रथम वाचना – पाटलीपुत्र वाचना7भ्रदवाहु के सानिध्य में महावीर निर्माण के पश्चात् पाटलीपुत्र पटना में अंग ग्रंथों संकलन किया गया।

2. द्वितीय वाचना – सम्राट खारवेल के समय में यह वाचना हुई इसमें प्रमाण हाथीगुफा शिलालेख से प्राप्त होते है।

3. माथुरी वाचना – वी.नि.सं. 827–840 में आचार्य स्कन्दिल के नेतृत्व में यह वाचना मथुरा में हुई थी।

4. वल्लभी वाचना – वी.नि.सं. 827–840 के मध्य ही आचार्य नागार्जुन की अध्यक्षता में सौराष्ट्र के वल्लभी नगर में हुई थी इसलिए इसे वल्लभी वाचना कहा गया।

5. देवर्धिगणि क्षमाश्रवण के समय की वाचना– इसमें अंग, उपांग, मूलसूत्र एवं छेदसूत्र आदि को पूर्ण संशोधन कर लिपिबद्ध कराया गया। इसकी वाचना का क्षेत्र वल्लभी नगर था।

आगम साहित्य के रूप –

मूलतः आगम दो प्रकार की भाषाओं में संकलित हुए जिसमें 1. शौरसेनी और 2. अर्धमागधी आगम नाम की संज्ञा प्राप्त हुई।

आगम–वर्गीकरण – अर्हत् वचन 1. अंग प्रविष्ट और 2. अंग बाह्य हैं।

अर्धमागधी आगम–साहित्य – अंग आगम – आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, भगवती, ज्ञातृधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृदशा, अनुतरोपपादिक, प्रश्नव्याकरण, विपाकसूत्र और दृष्टिवाद।

उपांग आगम – औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, जम्बूद्वीप–प्रज्ञप्ति, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, निरयावलिया, कल्पबसंतिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्टिदशा,

मूलसूत्र –

आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी, अनुयोग और पिण्डनिर्युक्ति।

छेदसूत्र – निशीथ, महानिशीथ, बृहद्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध और पंचकल्प।

दश–प्रकीर्णक – आतुर प्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तन्दुलवैतालिक, चन्द्र वेध्यक, देवेन्द्र स्तव, गणिविद्या, महाप्रत्याख्यान, चतुःशरण, वीरस्तव और संस्तारक।

अंग आगमों का संक्षिप्त परिचय –

1. आचारांग – आयारो, आयारंगो, आचारांग नाम से प्रसिद्ध यह ग्रंथ दो श्रुत–स्कंधों में विभाजित है। इसके 1. प्रथम श्रुतस्कन्ध में नौ अध्ययन एवं चवालीस 44 उद्देशक हैं। इसमें सर्वप्रथम षट्काय जीव वर्णन है। इसके पश्चात् आचार–विचार आदि का तथा नवें अध्ययन में महावीर स्वामी का निष्क्रमण, विहार, तपश्चर्या उन पर उपसर्ग, ध्यान आदि का उल्लेख है। द्वितीय श्रुत–स्कंध में सोलह अध्ययन है। ये सभी

अध्ययन श्रमणों की आहार–विहार चर्या आदि पर प्रकाश डालते हैं। यह प्राकृत भाषा का सबसे प्राचीन आगम है। यह 18000 श्लोक प्रमाण ग्रंथ है।

2. सूत्रकृतांग – सूतगड,सूयगड, सूयगडंग आदि नाम से प्रसिद्ध यह आगम 363 दार्शनिक मतों की समीक्षा करता है। इसके दो श्रुतस्कंध हैं – 1. प्रथम श्रुत स्कंध 16 अध्ययन का है। जिसमें स्वसमय (अपना मत–अपना पक्ष) और पर–समय (अन्यमत) आत्मवाद, शरीरवाद, क्रिया–अक्रियावाद, स्कन्धवाद, भूतवाद,क्षणिकवाद, नियतिवाद, लोकवाद, विज्ञानवाद एवं ज्ञानवाद आदि विविध दार्शनिक विचारों का उल्लेख है। 2. द्वितीय श्रुतस्कन्ध – गद्य–पद्य युक्त है जिसमें दर्शन, धर्म, आचार–विचार आदि की दृष्टि है। इसमें 36000 पद प्रमाण के सूत्र हैं।

3. स्थानांग सूत्र – यह आगम दश अध्ययन युक्त एक से लेकर दश स्थानों (दश तरह के भेदों) पर दृष्टि डालता है। इसमें 783 सूत्र हैं। यह 42000 पद प्रमाण बाला आगम है।

4. समवायांग – इसमें संख्यात्मक दृष्टि से तत्त्व आदि पर विचार किया गया। समवाय–संकलन, समूह भेद आदि का नाम है। इसलिए इसमें एक से करोड़ तक की संख्या के सूत्र हैं। इसमें 1,64000 पद हैं। जिसमें द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप समवाय है।

5. व्याख्या प्रज्ञप्ति – इसमें 36000 आत्मा, पुद्गल आदि से संबंधित प्रश्नों के समाधान अनेकान्त शैली में दिए गए हैं। इसमें दार्शनिक, आध्यात्मिक, तात्विक, सम–सामायिक मूल्यों, जीवन–पद्धति एवं गणित–भूगोल, ज्योतिष आदि के कारणों पर प्रकाश डाला गया है। इसे भगवती सूत्र भी कहते हैं। इसमें 2,28000 पद और 60,000 प्रश्न हैं।

6. ज्ञातृधर्मकथा – कथात्मक प्रस्तुति के इस आगम में विविध कथाएँ हैं। जिसमें मानव, समाज, तिर्यंच–पशु पक्षी, जलचर–थलचर एवं नभचर जीव–जन्तुओं के उदाहरणों से अध्यात्म ज्ञान को प्रस्तुत किया यह कथा साहित्य का प्रारंभिक ग्रंथ है।यह कथा ग्रंथ 5,56000 पद प्रमाण हैं।

7. उपासक दशांग– आनंद, कामदेव, चुलनी पिता, सुरादेव, कुण्डकौलिक, शकडालपुत्र, महाशतक, नन्दिनी–पिता, शालिनीपिता एवं तेतलीचिता के साधना मार्ग को दर्शाया गया है। ये श्रमणोपासक/श्रावक व्रत पालन करते हुए अपने व्यापार में भी अग्रणी थे। इस अंग ग्रन्थ में 11,70,000 पद हैं।

8. अन्तकृतदशांग – यह महान (90) आत्माओं के जीवन की सम्पूर्ण स्थिति के साथ–साथ कर्म बंधनों से मुक्त कैसे हो सकते है इस प्रकार प्रकाश डाला गया।उक्त सभी साधक कर्मों के बंधनों से छूटकर मुक्ति को प्राप्त होने वाले जीव हैं। इस अंग ग्रंथ में 23,28000 पद प्रमाण दश–दश अंतकृत केवलियों का वर्णन है।

9. अनुत्तरोपपातिक – विजय, वैजयंत, जयंत,अपराजित अैर सर्वार्थसिद्धि ये अनुत्तर विमान ही इन विमानों के देव होकर धन्ना, सुनक्षित्र, ऋषिदास आदि साधक मुक्ति को प्राप्त हुए हैं। इसमें दश अध्ययन, तीन वर्ग एवं 33 दिव्य पुरूषों के जीवन का वर्णन है इन्हीं पुरूषों के जीवन चारित्र के माध्यम से तात्विक चिंतन, धर्म दर्शन आदि को प्रतिपादित किया गया है। इसका प्रमाण 92,44000 पद हैं।

10. प्रश्न व्याकरण सूत्र – भगवान महावीर स्वामी ने जीव–जगत् के कल्याणार्थ प्रश्नों के जो समाधान दिए वे महत्त्वपूर्ण हैं। इस आगम में दस द्वार हैं। जिसमें अहिंसा, सत्य आदि के साथ विविध जिज्ञासाओं के समाधान हैं। इसमें 93,16000 पद प्रमाण प्रश्नों के समाधान हैं।

11. विपाकसूत्र – शुभ और अशुभ इन कारणों को निरूपित करने वाला यह आगम दो श्रुतस्कन्ध में विभक्त हैं। दुःख विपाक और सुखविपाक। इसमें जो कथात्मक शैली है वह रोचक, प्रभावक एवं संवेदनशील है। यह 1,84,00,000 पद प्रमाण हैं।

12. दृष्टिवाद – समवायांगसूत्र के अनुसार इसमें परिकर्म, सूत्र, पूर्वगत, अनुयोग और चूलिका ये पांच विभाग हैं। इसमें मूलतः चौदह पूर्वों के विषय वर्णन को महत्त्व दिया गया है।

उक्त अंग ग्रंथ अध्यात्म मूल्यों को महत्त्व देते हैं। इनमें समाजदर्शन, इतिहास, भूगोल, खगोल, ज्ञान–विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन, अंतरिक्ष, गणित ज्योतिष आदि के सूक्ष्म विषय हैं।

उपांग आगम – अंग–आगमों की तरह उपांग आगम भी महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि इनमें कर्म, कर्मफल, आत्मा,

जीव, जगत् आदि की प्रस्तुति अनेक दृष्टांतों के माध्यम से की गई है।

1. औपपादिक सूत्र – इसमें उपपात–जन्म को प्राप्त देवों के वण्रन से पूर्व मनुष्य पर्याय में किस तरह कर्मबंध के कारणों का नाश कर किस तरह सिद्ध गमन को प्राप्त किया उन सबका वर्णन है। इसमें देव एवं नारकियों के सिद्धि गमन के कारणों पर प्रकाश डाला गया। देव एवं नारकी जीव उपपात जन्म वाले होते है। इसलिए इसका नाम औपपादिक हैं।

2. राजप्रश्नीय – यह दार्शनिक ग्रंथ है। इसमें 217 सूत्र हैं। इसमें प्रसेनजित राजा की कथा है। जिसमें श्रावकव्रत पालनकर देवगति का बंध किया। इसी में विविध प्रश्नों के समाधान है। केशी श्रमण से पूछे गए प्रश्नों के समाधान भी हैं।

3. जीवाजीवाभिगम – यह जीवाजीवाभिगम और अजीवाभिगम का एक मात्र सूत्र ग्रंथ सांस्कृतिक सामग्री से पूर्ण हैं।इसमें 20 विभाग एवं 227 सूत्र हैं।

4. प्रज्ञापना – पण्णावणा–प्रकर्षज्ञान का यह आगम सभी तत्त्वों का निरूपण करने वाला ग्रंथ हैं। इसे जीवाभिगम में वनस्पति विज्ञान की बहुलता हैं। इसमें विविध लिपियों का भी उल्लेख हैं।

5. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति – इसमें द्रव्य की अपेक्षा विविध कालों, स्थानों, क्षेत्रों आदि का वर्णन हैं। इसमें भावी तीर्थंकरों, बलदेव एवं वासुदेवों का भी वर्णन है। यह दो भागों में विभक्त 176 सूत्रों से युक्त ग्रंथ हैं इसके पूर्वार्द्ध में चार वच्छकार और उत्तरार्द्ध में तीन वच्छकार हैं।

6. सूर्यप्रज्ञप्ति – इसमें 20 प्राभृत हैं। इसमें सूर्यमण्डल, उसकी गति, प्रकाशक्षेत्र, संस्थान, लेश्या प्रतिघात, उदय अस्त, स्थिति आदि का वर्णन है। यह ज्योतिष एवं गणित का ग्रंथ है।

7. चन्द्रप्रज्ञप्ति – इसमें चंद्रमण्डल, गति, संस्थान, क्षय, वृद्धि एवं प्रकाश आदि का वर्णन है।

8. निरयावलिका – नरक की आवलि पूर्ण करने वाले पुरूषों का उल्लेख है।

9. कल्पावंतसिका – यह देवलोक को प्राप्त पुरूषों की गाथा को प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ है।

10. पुश्पिका– इसमें चन्द्र, सूर्य, महाशुक्र, बहुपुत्रिया, पूर्णभद्र, मणिभद्र, दत्र, बल, शिव और अनादीत की साधना का उल्लेख है।

11. पुश्प चूलिका – इसमें दश अध्याय हैं। जिनमें श्री, ह्वी, घृति, कीर्ति, बुद्धि, लक्ष्मी आदि दश देवियों का निरूपण है।

12. वृष्टिदशा – इसमें 12 अध्ययन हैं। जिनमें वृष्टिवंश में उत्पन्न बारह पुत्रों का जीवन दिया गया है। इन बारह पुत्रों ने तीर्थंकर नेमिकुमार के पास दीक्षा ली थी।

मूलसूत्र –

साधु के मूलगुण एवं उत्तर गुणों को प्रतिपादित करने वाले इस सूत्र में आचार विचार एवं विहार आदि की दिशा पर प्रकाश डाला गया। दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नंदी, अनुयोगद्वार, आवश्यक एवं पिण्डनिर्युक्ति नाम से प्रसिद्ध ये सभी ग्रंथ महत्त्वपूर्ण हैं।

दशवैकालिक – इसमें दश अध्ययन एवं दो चूलिकाएं हैं इसका अध्ययन विकाल में नहीं किया जाता है। इसमें सन्ध्या समय में पढ़ा जाता है। यह साधुओं की चर्या का विशेष ग्रंथ है।

उत्तराध्ययन सूत्र – इसमें 36 अध्ययन हैं। यह सैद्धान्तिक ग्रंथ है। जिसमें साधु और उनके शिष्य के विनय के साथ मनुष्य जीवन जीने के विविध आयाम है। इसमें तत्त्व चिंतन, आचार–विचार, नय–प्रमाण आदि का विवेचन है। सम्पूर्ण जैन सिद्धांत की यह गीता साधुओं में प्रतिदिन पढ़ा जाता है और श्रावक भी इसे पढ़ते हैं।

नन्दीसूत्र – यह संघ व्यवस्था तीर्थंकर, गणधर आदि की नामावली वाला ग्रंथ है। इसमें पांच ज्ञान (मति, श्रुत,अवधि, मनःपर्यय और केवलज्ञान) तीन अज्ञान (कुमति,कुश्रुत,कुअवधि) का विस्तृत विवेचन है। यह जैनदर्शन के रहस्य को प्रस्तुत करने वाला श्रुत है।

अनुयोगद्वार – इसमें प्रमाण, नय, निक्षेप, आनुपूर्वी आदि का वर्णन है। इसमें काव्य तत्त्वों का भी समावेश है।

आवश्यकसूत्र– इसमें सामायिक, स्तव, बन्दन, प्रतिक्रमण, कार्योत्सर्ग और प्रत्याख्यान इन छह साधुओं के करने योग्य कर्तव्यों का विवेचन है।

पिण्ड–निर्युक्ति – इसमें अधिकार हैं। यह 671 गाथाओं का ग्रंथ साधुओं के पिण्ड (आहार) की विधि एवं निषेध का ग्रंथ है।

छेदसूत्र –

निशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध, पंचकल्प, एवं महानिशीथ सूत्र छेदसूत्र है। जिनमें श्रमणों की आचार संहिता उत्सर्ग, उपसर्ग, दोष और प्रायश्चित आदि की विधि पर प्रकाश डाला गया ।

1. निशीथ – इसमें आचार विचार के नियमों का वर्णन द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव की दृष्टि से किया गया है। निशीथ का अग्र चूलिका भी है। जिसमें शुद्धिकरण पर बल दिया गया।

2. बृहत्कल्पसूत्र – इसमें छः उद्देशक एवं 81 अधिकार है यह श्रमणों के मूल्यों को स्थान देने वाला महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। इसमें सभी प्रकार की सांस्कृतिक सामग्री है।

3. व्यवहार सूत्र – यह श्रमण समाचारी की ग्रंथ है। इसमें 267 सूत्र एवं दश उद्देशक है।

4. दशाश्रुतस्कन्ध – यह काव्यमय ग्रंथ तीर्थंकरों के जीवन परिचय को प्रस्तुत करने वाला ग्रंथ है। इसमें दश अध्ययन है।

5. पंचकल्पसूत्र –

6. महानिशीथ – यह श्रमणों की प्रायश्चित विधि का ग्रंथ है।

प्रकीर्णक –

ये दश की संख्या में पद्यात्मक रचनाएं हैं। प्रकीर्णकों की संख्या 14000 मानी गई है। उनमें चतुःशरण, आतुर प्रत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तन्दुल–वैचारिक, संस्तारक, गच्छाचार, गणितविद्या, देवेन्द्र स्तव और मरण समाधि प्रचलित प्रकीर्णक हैं।

1. चतुःशरण– अरहंत, सिद्ध, साधु और धर्म ये चार उत्तम शरण चतुर्गति निवारक हैं। यह वीरभद्र की रचना है। सोमसुंदरसूरी अवचूर्णि, भुवनतुंग की वृत्ति और गुणरत्न की अवचूरि हैं।

2. आतुर प्रत्याख्यान– इसके रचनाकार वीरभद्र है। इन्होंने 70 गाथाओं में बालमरण, पंडितमरण आदि समाधियों का कथन है।

3. महाप्रत्याख्यान– यह 142 गाथाओं का प्रकीर्णक है। इसमें तित्थयर मार्ग का प्रतिपादन किया गया है। इसमें दुश्चरित्र की निन्दा और ज्ञान, दर्शन एवं चारित्र की प्रशंसा है।

4. भक्त प्रतिज्ञा– इसमें 172 गाथाएँ है। इसके रचनाकार वीरभद्र है। इन्होंने भक्त प्रतिज्ञा, इंगिनीमरण और पादपीयमरण का प्रतिपादन किया है।

5. तन्दुल–वैचारिक – बालदशा, क्रीडा, मंदा, बला, प्रज्ञा, हायनी, प्रपंधा प्राग्भारा उन्मुखी औश्र शाथनी इन दश दशाओं का उल्लेख है।

6.संस्तारक– संयमी साधक की संस्तारक क्रिया का इसमें विवेचन है।इसमें अर्णिका, सुकोमल ऋषि, अवंति, चाणक्य, अमृतघोष, चिलाति पुत्र, गज सुकुमाल, आदि की ध्यानस्थ अवस्था का वर्णन है।

7. गच्छाचार – यह 137 गाथाओ का ग्रंथ है। जिसमें गच्छ अर्थात् साधु समूह के आचार की प्रधानता है। ज्ञान, ध्यान, तप, शील एवं भावना साधु की आचार संहिता में है।

8. गणिविज्जा – यह 82 गाथाओं का प्रकीर्णक दिवस, तिथि, नक्षत्र, करण, गृह मूहुर्त, शकुन, लग्न एवं निमित्त आदि को प्रस्तुत करता है।

9. देवेन्द्र–स्तव – इसमें 307 गाथाएं है। जो सूर्य, चन्द्र आदि 32 देव–देवेन्द्रों का स्थिति पर प्रकाश डालती है।

10. मरण समाधि – यह मरण विभक्ति नाम से प्रचलित सल्लेखना विधि का प्रकीर्णक है। यह सभी प्रकीर्णक ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप आदि के प्रतिपादक अध्यात्म दृष्टि को प्रस्तुत करते हैं।

आगमों का व्याख्या साहित्य – आगमों पर निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, संस्कृतवृत्ति एवं गुजराती आदि में भी व्याख्याएं है।

(क) निर्युक्तियाँ – ये प्राकृत में पद्य युक्त व्याख्याएं है। आचारांग, सूत्रकृतांग, सूर्यप्रज्ञप्ति, व्यवहार,

वृहत्कल्प, दशाश्रतुस्कन्ध, उत्तराध्ययन, आवश्यक,दशवैकालिक और ऋषिभाषित आगमों पर निर्युक्तियाँ (निर्वचन, व्ययुत्पत्ति) लिखी हैं। ये सभी भद्रबाहुआचार्य द्वारा छंदोबद्ध रचनाएं हैं।

1. आचारांग निर्युक्ति – इसके दो श्रुतस्कंधों पर शीलंकाचार्य ने 274 गाथाओं में आचार विचार की महत् दृष्टि दी है।

2. सूर्यप्रज्ञप्ति – यह भद्रबाहुरचित निर्युक्ति सूर्य की गति, स्थिति आदि का परिचय देती है।

3. व्यवहार – इसके रचनाकार भदबाहु ने जीवन जीने की कला पर प्रकाश डाला है।

4. बृहद्कल्प – इसके रचनाकार भदबाहु ने श्रमण श्रमणियों की आचार–विचार समाचारी पर विवेचन किया है।

5. दशाश्रुतस्कन्ध – यह रचना भदबाहु की है। जिसमें पर्युषण की व्याख्या, द्रव्य, काल, भाव, भव आदि के आधार पर समाधि चिंतन को प्रस्तुत किया है।

6. उत्तराध्ययन – इसके 36 अध्ययनों के विषय को 607 गाथाओं में व्युत्पत्ति सहित दिया गया है। प्रायः जो कथात्मक पद्य में है।

7. सूत्रकृतांग – इसमें प्रतिपादित जो दार्शनिक शब्द है उनकी व्याख्या शीलंकाचार्य ने की है।

8. आवश्यक – इस पर भद्रवाहु स्वामी ने 2386 गाथाओं में अनुष्टुप छंद युक्त जो साधक के आवश्यक क्रियाओं पर प्रकाश डाला है वह दार्शनिक, सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक एवं समग्र सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारति है।

9. दशवैकालिक – यह 371 गाथाओं की निर्युक्तिमय ग्रंथ समता, समाधि, तप एवं साधकी समाचारी का विशेष विवेचक हैं।

10. ऋशि भक्ति – आचार्य भद्रबाहु ने प्रत्येक बुद्ध की इतिवृत्त दृष्टि दी है। उक्त निर्युक्तियाँ परिभाषा, स्वरूप, एवं विशेष विवेचन युक्त है।

भाष्य –

आगमों पर भाष्य चौथी–पांचवी शताब्दी में लिखे गए है। भाष्य प्राकृत भाषा में छंदोबद्ध है। इसमें अर्धमागधी भाषा की प्रमुखता है जो दार्शनिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक सामग्री से परिपूर्ण ऐतिहासिक विवेचन भी लिए हुए है। कल्प, पंचकल्प, जीतकल्प,उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक, निशीथ और व्यवहार भाष्य ही अब तक सामने प्राप्त हैं।

आगमों पर चूर्णियाँ – चूर्णिया जिनदास गणि महत्तर ने संस्कृत में लिखी है। इनमें दृष्टांत के रूप में प्राकृत में आख्यान (कथाएँ) दी गई हैं वे विषय की विवेचना मे मूल सहभागी हैं। उपलब्ध चूर्णियों के नाम इस प्रकार है– आचारांग, सूत्रकृतांग, व्याख्याप्रज्ञप्ति, जीवाजीवाभिगम, निशीथ, महानिशीथ, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध, वृहत्कल्प, पंचकल्प, ओघ, जीतकल्प, उत्तराध्ययन, आवश्यक, दशवैकालिक, नन्दी, अनुयोग और जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति आदि पर चूर्णियां लिखे गए है।

वृत्तियां – आगमों पर प्राकृत एवं संस्कृत में अनेक वृत्तियां लिखी गई है। जो दार्शनिक, तात्विक एवं चिंतन से महत्त्वपूर्ण हैं।

1. विशेषाश्यकवृत्ति – यह जिनभद्रगणि द्वारा प्रस्तुत वृत्ति स्वोपज्ञ से युक्त है। यह सरल एवं विविध उदाहरणों सहित है।

2. हरिभद्रसूरि और उनकी वृत्तियां – नन्दी, अनुयोग, दशवैकालिक, प्रज्ञापना और आवश्यक पर वृत्तियां प्राकृत गद्य एवं संस्कृत व्युति, विश्लेषण तथा विषय प्रतिपादन से युक्त है।

3.विशेषावश्यक भाष्य – इस पर 13700 श्लोक प्रमाण वृत्ति कोट्याचार्य ने की है।

4. आचारांग वृत्ति – शीलंकाचार्य द्वारा तात्विक दृष्टि से आचारांग पर वृत्ति लिखी है।

5. सूत्रकृतांग वृत्ति – शीलंकाचार्य की ही दार्शनिक वृत्ति में विविध मतों की दृष्टि रखकर अनेकान्त स्याद्वाद की निपेक्ष दृष्टि को महत्व दिया है।

अभयदेवसूरि की वृत्तियां – स्थानांग, प्रश्नव्याकरण, समवायांग, भगवती, ज्ञाताधर्म, उपासकदशा,

अन्तकृदशा, अनुतरोपपातिक, विपाक एवं औपपातिक पर सैद्धान्तिक वृत्तियां कथा सहित है।
मलयगिरि की वृत्तियां – आप ज्योतिष, गणित, भूगोल, नक्षत्र विज्ञान, ,खगोल आदि के ज्ञाता थे। आपने हजारों श्लोक प्रमाण वृत्तियां लिखी है भगवती (द्वितीय शतक) राजप्रश्नीय, प्रज्ञापना, चंद्र, सूर्य, नन्दी, व्यवहार, आवश्यक, वृहत्कल्प, पिण्ड, ज्योतिष्करण्ड, धर्मसंग्रहणी, कर्मप्रकृति, पंचसंग्रह, षडशीति, सप्तशीति, वृहत्संग्रहणी बृहतक्षेत्रसमास आदि पर वृत्तियां लिखी है।
उत्तराध्ययनवृत्ति – सुखबोध सुबोधक वृत्ति नेमिचन्द्रसूरि ने लिखी है। इन्हें देवेन्द्रगणि भी कहा जाता है। यह वृत्ति सैद्धान्तिक आध्यात्मिक है। जो 36 अध्ययनों पर लिखी गई।

श्रीचन्द्रसूरि की वृत्तियां – जीतकल्प, नन्दी, निशीथ, पिण्डविशुद्धि, न्यायप्रवेश, जयदेवछन्द, शास्त्रटिप्पण, श्राद्धसूत्र, प्रतिक्रमण आदि पर वृतियां है।
मलधारी हेमचन्द्र की वृत्तियां – आपकी अनेक वृत्तियां है उनमें आवश्यक, शतकविवरण, अनुयोगद्वार, नन्दि, विशेषावश्यक भाष्य,जीत, पुष्पमाला, भवभावना आदि पर वृत्तियां हजारों श्लोक प्रमाण है।
(आगम अनुशीलन देवेन्द्र मुनि, प्राकृत साहित्य नेमिचंद्र शास्त्री, आचारांग शीलांकवृत्ति – एक अध्ययन, डॉ. राजधी साध्वी)?

स्थापत्य की दृष्टि से कथा के प्रकार

सयलकहा (सकलकथा) खंडकहा (खण्डकथा),उल्लापकहा (उल्लापकथा) परिहासकहा (परिहासकथा)
आगम–प्राकृत–कथा–आगमों की प्राकृत कथा ग्रंथों पुरातन हैं। प्राय सभी में कथाएँ हैं। आचारांग, सूत्रकृतांग, भगवती आदि के अतिरिक्त ज्ञातृकथा, उपासकदशा, अनुत्तरोपाति,, विपाकसूत्र एवं व्याख्यात्मक आदि आगमों में अनेक कथाएँ हैं।
आगम के व्याख्या साहित्य में कथाएँ–

आचारांगवृत्ति, सूत्रकृतांगवषत्ति व्यवहारभाष्य, वृहत्–कल्प भाष्य, आवश्यकनिर्युक्ति, चूर्णी, निशीथ महानिशीथ आदि में कई कथाएँ हैं। उत्तराध्ययन टीका में लगभग एक सौ पच्चीस कथाएँ वृहद् गच्छ के आचार्य नेमिचन्द्र सूरी ने ही दी गई। इसी की अन्य टीकाएँ भी कथाओं से भरी–पड़ी हैं। जिनमें जीव–जंतुओं, पशु–पक्षिओं के रुपक आदि से नीति–विज्ञान की चर्चा की गई है।

पानी में रहनें वाले जीव–जंतुओं के दृष्टान्तों से आचार–विचार एवं सिद्धान्त की पुष्टि दी गई है। जलाशय में रहने वाले दो कछुओं के उदाहरण कर्म की समीक्षा की गई। चार पुत्र–वंधुओं के पाँच शालिधान्य–कथों से पंच महाव्रतों को पालन करने या नहीं पालन से क्या हो सकता है उसकी स्थिति पर प्रकाश ड़ाला गया। कथाओं में मूर्ख, ज्ञानी, ध्यानी, भय, भैषज, आदि के रोचक प्रसंग हैं।
प्राकृत के स्वतंत्र कथा ग्रंथ– गद्य–पद्य दोनों ही में प्राकृत कथाएँ लिखी गई हैं। जो आक्षेपिणी (वस्तु यथार्थ) (संसार शरीर – भोगों की विरक्ति की कथाएँ)
1.तरंगवतीकथा– यह उपन्यास शैली की कथा है जिसमें अनेक अवान्तर कथाएँ हैं। इसका दूसरा नाम तरंगलोला है। इसके रचनाकार पादलिप्तसूरि हैं। इसका समय वि. सं. 151–219 के मध्य माना गया है। इसकी विराग दृष्टि है।
2.वसुदेवहिंडी– यह कथा साहित्य की अनुपम कषति है इसमें 29 लंभक हैं। इसका ग्यारह हजार श्लोक प्रमाण विस्तार है। इसमें देश–देशान्तर भ्रमण के कारण हैं। यह गुणाढ़य की कथा की तरह विस्तृत है। इसके प्रथम खण्ड के रचनाकार संघदासगणि हैं। और द्वितीय खण्ड़ के

रचयिता धर्मदास गणि हैं। इसमें राम–कष्ष्ण, बलदेव–वासुदेव के संसार भ्रमण के साथ–साथ प्रधुम्नकुमार की कथा विस्तार से दी गई है।
3.समराइच्चकहा– समरादित्य कथा– यह वृहद संस्कृत कथा कादंबरी की तरह विविध आख्यान, उपाख्यान आदि से युक्त प्राकृत–कथा राजकुमार समरादित्य नाम से प्रसि़द्ध नौ भव की आख्यायिका प्रस्तुत करती है। गुणसेन और प्रतिनायक अग्निशर्मा की प्रतिशोध प्रवृत्ति कथा आते है। कौतुहल पूर्ण है।

पाठक जब तक इसे पूर्ण नहीं पढ़ लेता तब तक उसे वस्तुस्थिति का ज्ञान नहीं होता है। इसमें प्रतिशोध की भावना विभिन्न रुपों में है। इसमें वर्णन विविधता, प्रकृति की सुकुमारता, आमोद,प्रमोद, रुप विधान, रमणीयता, प्रवाह आदि के साथ–साथ सांस्कृतिक मूल्यों की सम्पूर्णता भी प्रदान करती है। इसके रचनाकार हरिभद्रसूरि है।

4. धूर्ताख्यान– यह हरिभद्रसूरि की व्यंग प्रधान रचना है। जिसमें पाँच धूर्तों के आख्यानक (कथानक) मिथ्या, कल्पनीय दृष्टि को लेकर चलते हैं। इसमें अंध–विश्वास, जातिवाद, अमानवीय तत्त्व एवं विकृत दृष्टियों से बचने के उपाय दिए गए है।

5. निर्वाणलीलावती–जिनेश्वरसूरि ने 11 वीं शताब्दी में इन कथा की रचना पद्य में की है। जिसमें पाँच पापों के फल पर प्रकाश ड़ाला गया है।

6. संवेगरंगशाला– इसकी रचना जिनचन्द्र ने 12 वीं शताब्दी में की । इसमें गौतम स्वामी की कथा है। इसी के साथ श्रोणिकराजा, वसुदत्त कुरुचन्द्र, वज्रमित्र , नमिराजा आदि के कथानकों के माध्यम से संवेग (संसार त्याग) से मुक्ति पथ का दिग्दर्शन कराया है।

7. नागपंचमी कहा– महेश्वरसूरि की यह रचना ज्ञानपंचमी के महत्त्व पर प्रकाश ड़ालती है। 12 वीं शताब्दी की इस रचना में भवितब्यता के कई तथ्य हैं।

8. कहारयणकोश– कथारत्नकोश– वि. सं 1158 की यह रचना गुणचन्द्र की है। जिसमें 50 कथाएँ धर्म नीति पर प्रकाश ड़ालती है।

9. णम्मदासुंदरीकहा– नर्मदासुंन्दरी कथा वि. सं 1187 में महेन्द्रसूरि ने इसकी रचना की। इस पद्य प्रधान रचना में 1117 पद्य है। इसमें महासती नर्मदासुंदरी के सतित्त्व की प्रधानता है।

10. कुमारपालप्रतिबोधकहा– यह सोमप्रभसूरि की रचना वि. सं 1241 में लिखी गई। इसमें 58 कथाएँ चारित्र की पुष्टि करती हैं।

11.आख्यानमणिकोश– इसे आम्रदेवसूरि ने ई. 1134 में संकलित किया। इसमें 41 अधिकार 146 आख्यान हैं। इसमें बुद्धिकौशल, शौर्य, आत्मशोधन, सम्यक्त्व, जिनदर्शन एवं उसका फल तथा मिथ्या मान्यताओं का निराकरण है।

12. जिनदत्ताख्यान– यह सुमतिसूरि की रचना वि. सं 1246 में लिखी गई। इसमें
शोक, शील एवं जीवन की विषम परिस्थितियों का चित्रण है।

13. रयणसेहर–णिवकहा– रत्नशेखर नृपकथा– जिनहर्षसूरि की यह रचना वि. सं. 1487 में लिखी गई। यह प्रेमाख्यान है।

14. महिपालकथा– वीरदेवगणि की यह रचना 15 वी. शताब्दी में लिखी गई। यह पद्य शैली में है।
इसकी प्राकृत की कथाएँ धर्मतत्त्व, नीति, शिक्षा, साधना, प्रेम, त्याग, बलिदान,साहस, बुद्धिचातुर्य, शील, सदाचार, अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, आत्मसाधना आदि की अभिव्यंजना पूर्ण है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आख्यानमणिकोश के संकलन कर्ता कौन है?
(क) उद्योतनसूरि (ख) सुमतिसूरि (ग) वीरदेव (घ) आम्रदेव (घ)

2. आगमकथा का प्रमुख ग्रंथ है?
(क) समवायांग (ख) ज्ञातृधर्मकथा (ग) नंदि (घ) उत्तराध्ययन (ख)

3. तरंगवती कथा का दूसरा नाम है?
(क) तारावती (ख) नर्मदासुंदरी (ग) तरंगलोला (घ) वसुदेवहिंड़ी (ग)

4. समरादित्यकथा के रचनाकार कौन है?
(क) हरिभद्र (ख) नंदिसेन (ग) हेमचंद्र (घ) जिनचंद्र (क)

प्राकृत चरित्र–काव्य–

चरित्र प्रबन्ध मनः प्रधान, चेतना प्रधान, यश–कीर्ति, जगत्–चित्रण, चरित्रमूलक कथानकों से पूर्ण होते हैं। वस्तुतः तिरसठ महापुरुषों के आख्यानों के आधार पर जो प्रबंध चरित्र–चित्रण को लेकर लिखे जाते हैं वे चारित्र काव्य पौराणिक होते हैं। इतिवृत्त पर आधारित ऐतिहासिक चारित्र काव्य हैं। चरित्र

काव्यों में नायक सभी पुरुषार्थ को करता है, फिर वही अंतिम पुरुषार्थ मोक्ष– पथ की ओर अग्रसर हो जाता है। इनमें प्रसंगवश अलंकृत वर्णन, आचार–विचार दर्शन,उपदेशात्म नीति वंश, जाति–उपजाति के यथार्थ चित्रण भी होते हैं। इनमें व्यापक महिमा रहती है। ये मूलकथा स्वरूप से जुड़े हुए अवान्तर–कथाओं, पात्रों भाव–अनुभावों का विषय निरूपण युक्त काव्य होते हैं। इसके रचनाकार द्वारा इनमें उदारता, चरित्रोद्घाटन के जीवन के विविध रूपों का चित्रण भी करते हैं।

प्रमुख प्राकृत चरित्र काव्य और उनका परिचय–

1. पउमचरियं – पद्मचरित्र– के रचनाकार विमलसूरि हैं। यह रचना 3–4 वी. शताब्दी की है। यह रामकथा पर आधारित रचना है। इसमें राजा दशरथ और उनकी अपराजिता एवं सुमित्रा का चित्रण है। नारद दशरथ राजा को रावण वध की भविष्यवाणी करते हैं। पुत्र द्वारा वध किया जाएगा। इसी कारण वे छद्मवेश में रहने लगे। संयोगवश कैकेयी के स्वयंवर में पहुँचे। जहाँ कैकेयी द्वारा दशरथ का वरण किया गया। रुष्ट अन्य कुमारों के द्वारा उन्हें घेरना चाहा, पर कैकेयी की रथ संचालन की कुशलता ने उन्हें विजयी बनाया।

उनकी रानी अपराजिता का पुत्र पद्मसदृश होने से पद्म/राम कहलाए सुमित्रा ने लक्ष्मण को जन्म दिया और कैकेयी का पुत्र भरत कहलाया।

यह विविध काण्ड़ों में विभाजित काव्य अंत में विराग परिणाम से पूर्ण होता है। इसमें विमलसूरि ने शुद्ध आनन्द की अनुभूति को महत्त्व दिया। विविध रस, अलंकार, गाथा, अनुष्टुप, वसंतिलका, मालिनी उपजाति, इन्द्रवज्र, उपेन्द्रवज्रा आदि छंदों के प्रयोग भी हैं। यह प्राकृत चरित्र काव्य महाराष्ट्री प्राकृत में है। जिसका भाषा सौष्ठव भी सर्वोत्तम है।

2. सुरसुंदरी चरियं – यह प्रेमाख्यान काव्य है। इसमें 16 सर्ग हैं। प्रत्येक सर्ग (परिच्छेद) में 250 पद्य हैं। इसके रचनाकार धनेश्वरसूरि हैं। इसका समय 1095 माना गया है। यह 4001 गाथाओं का चरित्र काव्य नायिका प्रधान है। इसलिए इसका नाम सुरसुन्दरी चरित्र काव्य रखा गया। इसमें क्रुरता, वीरता, युद्ध, मानव–जीवन के संघर्ष, कर्म सत्ता, उत्त्कर्ष, धार्मिकता, अध्यात्म पक्ष, राग–विराग आदि सभी का सुन्दर समायोजन हुआ है। सभी तरह के प्रकषति चित्रण, वर्णन, घटनाक्म अलंकष्त शैली में है। सम्पूर्ण काव्य प्रौढ़ एवं उदात्त शैली में है। इसकी अंतिम यात्रा में विरक्ति एवं तपश्चरण भी है।

3. सुपासणाहचरियं – सुपार्श्वनाथचरित्र– यह लक्षणगणि की रचना है। इसका समय वि. सं. 1199 माना गया है। इसमें पूर्वभव, के पश्चात् सुपार्श्वनाथ के सम्पूर्ण जीवन के चरित्र का चरित्र किया जाता है। वे केवल ज्ञान के प्राप्त सातवें तीर्थंकर बनें। इसमें गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष इन पाँचों कल्याणकों का कथात्मक प्रयोग समय, शक्ति, प्रदाता एवं अलंकृत है।

4. सिरिविजयचंद केवलिचरियं – इसके रचनाकार चन्द्रप्रभ महत्तर हैं। यह रचना वि. सं. 1127 की मानी जाती है। इसमें जिनपूजा महात्म्य को बतलाने के लिए विजयचन्द्र के जीवन के समग्र परिजन आदि के चित्रण के साथ धर्मोपदेश को विशेष महत्त्व दिया गया है। विजयचंद की दीक्षा, तप एवं केवलपद की अवस्था का इसमें चित्रण हैं।

5. महावीरचरियं – महावीर से संबंधित इस चरित्र के रचनाकर नेमिचन्द्र सूरि हैं। यह वि. सं. 1141 की रचना है। इसमें चारित्र, अनुभूति, मिथ्यात्व एवं सम्यक्त्व आदि की अभिव्यंजना है।

6. सुदंसणाचरियं – यह देवेन्द्रसूरि की रचना है। जिसमें सुदर्शना के शील, सदाचार, सत्यनिष्ठ व्यवहार आदि का चित्रण है। मूलकथाओं के साथ अवान्तर कथाएं दान, यश–कीर्ति तप विशुद्धि आदि को प्रतिष्ठित करती है। इसमें महाराष्ट्री प्राकृत में पद्य हैं। कुछ स्थानों पर संस्कृत के श्लोक भी समाहित हो गए हैं। काव्य उदास रसपूर्ण, और अलंकृत शैली है। ई. सन् 1270 के इस कवि ने आठ अधिकार एवं सोलह उद्देशकों में पूर्ण किया। नायिका प्रधान इस चरित्रकाव्य में चार हजार पक्ष भी हैं। जो इसकी विशेषता दर्शाते हैं।

7. कुम्पापुत्तचरियं – कूर्मा रानी के पुत्र दुर्लभकुमार के चरित्र से संबंधित यह खण्डकाव्य की तरह है इसके रचनाकार अनंतहंस ने सोलहवी शताब्दी में इसकी रचना की । चरित्र काव्य में राजा महेन्द्र और रानी कूर्मा का चित्रण करते हुए कवि हष्दय अनंतहंस ने 198 काव्य (पद्य) में सम्पूर्ण कहानी के चरित्र

प्रधान कारणों को उपस्थित करते हुए अति ही सहज भाव से कूर्मा पुत्र दुर्लभकुमार का चित्रण किया है।

दुर्गमपुर के राजा द्रोण और इसकी रानी द्रुमा के पुत्र का पूर्व भव सुलोचन नाम के मुनि ने सुनाया। उन्होंने भद्रमुखी यक्षिणी को दुर्लभ कुमार को पति बतलाया। इससे वह प्रसन्न हुई। वह रूपवती स्त्री कुमार के पास पहुँची। वह उसे उद्यान में क्रीडार्थ ले गई और अपना यथार्थ कह दिया।

कथा रोचक एवं प्रभावकारी है कवि ने वर्णनों को सरस बनाया। उसमें सूक्तियों, लोकोक्तियों आदि भी दी है।

8. अन्य चरित्र काव्य – प्राकृत में सोमप्रभ का सुमतिनाथ, वर्धमानसूरि का आदिनाथ एवं मनोरमा चारित्र।, देवेन्द्रसूरि का कृष्णचरित्र, जिनेश्वर सूरि का चन्द्रप्रभचरित आदि चरित्र ग्रंथ काव्य तत्त्वों से पूर्ण है।

9. चउप्पण महापुरिस चरियं – 54 महापुरूषों के चरित्र के रचनाकार शीलंकाचार्य हैं। यह काव्य गद्य–पद्य मिश्रित प्राकृत का चरितकाव्य उदात्त चरित्र (शलाका पुरुषों) के चरित्र का चित्रण करता है। नायकों के पूर्वभव अवान्तर कथाओं के संयोजन से पूर्ण किए गए।

10. जम्बूचरियं – जम्बूस्वामी के चरित्र के रचनाकार गुणपाल मुनि हैं। यह 14 वी. शताब्दी में लिखा गया। यह चरित्रकाव्य 16 उद्देशकों में विभक्त है। इसमें जम्बूकुमार के विविध प्रसंगों को आश्रय लेकर अनेक अलंकृत चित्रण किए है। प्रकृति चित्रण, आठ नायिका का रूप सौन्दर्य, वैराग्य आदि को संवाद युक्त शैली में दिया गया है।यह धार्मिक, सैद्धान्तिक, आध्यात्मिक चरित्रकाव्य वैराग्य भावना को उत्पन्न करने वाला है। इसकी गद्य–पद्य मिश्रित शैली अति ही प्रवाहमयी है।

11. रयणचूडराय चरियं – रत्नचूडराजचरित्र – इसके रचनाकार आम्रदेवसूरि के शिष्य नेमिचंद्र सूरि है। यह रचना वि.सं. 1229 और 1140 के मध्य की गई है। इसमें रत्नचूड का पूर्वभव, जन्म एवं परिवार सहित मेरूगमन तथा देशव्रत को अंगीकार करने का उल्लेख है। वस्तु वर्णनों में अनेक तथ्य है।

12. सिरिपासणाहचरियं – गुणचंद सूरि की यह रचना है जो पांच प्रस्तावों में विभक्त हैं। इसमें पार्श्वप्रभू समग्र चित्रण किया गया है। इसमें उत्कष्ट भावों का चरित्र चित्रण है।

13. महावीरचरियं – यह गद्य–पद्य मिश्रित रचना महावीर के समग्र चित्रण युक्त तत्त्वचिंतन से पर्ण है इसके रचनाकार गुणचंदसूरि के वि.सं. 1139 में इसे पूर्ण किया था।

14. चम्पूकाव्य – गद्य–पद्य मिश्रित रचना दृश्यों एवं वस्तु तत्त्व से पूर्ण होती है। प्राकृत में एकमात्र रचना है–

1. कुवलयमाला – उद्योतन सूरि की यह रचना जालोर में लिखी गई। यह वि.सं. 200 की रचना सांस्कषतिक सामग्री से पूर्ण है।

2. मुक्तक काव्य – जिसके प्रत्येक पद्य निरपेक्ष होते हैं। प्राकष्त में गाहासत्तसई (ई.स. 4वीं) वज्जालग्ग (सं. 795) जयबल्लभ द्वारा संकलित है। विसमवाणलीला, वैराग्य शतक (वि.1663) धम्मरसायणं(पद्मनंदि) आदि मुक्तक काव्य है।

प्राकृत में स्तुति, सट्टक, शब्दकोश, छंद, वैधक आदि से लिखे गए हैं।

प्राकृत – महाकाव्य

प्राकृत में महाकाव्य भी लिखे गए हैं। जो काव्य के गुणों से पूर्ण रसात्मकता लिए हुए हैं। जिन्हें नेमिचन्द ज्योतिषाचार्य ने निम्न प्रकार से विभाजित किया है।

–शास्त्रीय महाकाव्य –रसात्मक महाकाव्य।
–पौराणिक महाकाव्य?
–ऐतिहासिक महाकाव्य

प्राकृत महाकाव्यों का परिचय

1. सेतुबंध – यह महाकाव्य महाराष्ट्री प्राकृत में लिखा गया अनेक घटनात्मक विकास को लिए हुए है। इसके रचनाकार प्रवरसेन ने 15 आश्वासों में राम के सेतु निर्माण के वातावरण के साथ

रावणवध को विशेष उल्लिखित किया है। इसमें 1291 गाथाएं है। इस काव्य का रचनाकाल पांचवी शताब्दी माना गया है। यह सर्गबद्ध रचना वाल्मिकी रामायण के युद्धकाण्ड से संबंधित है।

2. गउडवहो – इसके रचयिता वाक्पतिराज हैं। यह कुलों में विभाजित है। इसमें 1209 गाथाएं हैं। यह आठवीं शताब्दी की रचना है।

3. द्वयाश्रय महाकाव्य – इसके रचनाकार आचार्य हेमचन्द्र हैं। इसमें आठ सर्ग हैं। इसके दो सर्गों में शौरसेनी, मागधी, पैशाची एवं अपभ्रंश के लक्षणों सहित काव्यानुशासन की पूर्णता है। इसका प्रथम चरण राजा कुमार पाल का है और उत्तर चरण व्याकरण के नियमों का निर्देश करता है।

4. लीलावई महाकाव्य – यह महाकाव्य दिव्यमानुषी कथा के लक्षणों से युक्त है। कवि कौतूहल ने 9 वीं शताब्दी में इसकी रचना की। यह प्रेमाख्यान युक्त काव्य सर्गबद्ध नहीं है, फिर विवेचन के आधार पर इसे महाकाव्य कहा गया।

5. सिरिचिंधकाव्य – इसमें 12 सर्ग हैं। शुक कवि ने प्राकृत नियमों को दर्शातें हुए कृष्णलीला को प्रस्तुत किया है।

प्राकृत खण्डकाव्य –

जीवन के एकपक्ष को प्रस्तुत करने वाले काव्य को खण्डकाव्य कहते हैं। प्राकृत में कई खण्ड काव्य लिखे गए हैं। उनमें से निम्न का परिचय दिया जा रहा है।

1. कंसवहो – कंशवध से संबंधित यह काव्य ई.सन् 1707 के बाद रामपाणिवाद ने लिखा। इसमें प्रेमतत्त्व, कंशबध, लोकजीवन, आदि को प्रस्तुत किया गया है।

2. उशानिरूद्ध – यह भी रामपाणिवाद की रचना है। इसमें चार सर्ग हैं। यह वाणासुर की कन्या उषा और श्रीकष्ण के पौत्र अनिरूद्ध के प्रेम प्रसंग को व्यक्त करने वाला खण्डकाव्य है।

3. भृंगसंदेश – यह मंदाकान्ता छंद में लिखा गया काव्य मेघदूत की तरह ही है। विरहिणी प्रिया के लिए भृंग द्वारा प्रेम का संदेश दिया जाता है।

इसी तरह के अन्य काव्य भी हैं। प्राकृतकोश, स्तुति, सट्टक आदि प्राकृत में लिखे गए हैं।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. पउमचरियं में किसका चरित्र है?
(क) कंस (ख) कृष्ण (ग) सीता(घ) राम ( )
2. विमलसूरि की रचना कौन सी है?
(क)सुपासणाहचरियं (ख) कुम्मापुत्त (ग) सुदंसणा (घ) पउमचरियं ( )
3. सेतुबंध के रचनाकार है–
(क) हेमचंद (ख) कालिदास (ग) प्रवरसेन (घ) भवभूति ( )
4. विरागसेतु के रचनाकार है–
(क) उदयचंद (ख) ज्ञानचंद (ग) रायचंद (घ) रमेशचन्द ( )

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. रामपाणिवाद का कौन सा काव्य है?लिखे–
2. पउमचरियं में किसका चरित्र है?
3. हेमचन्द के ऐसे काव्य का नाम लिखिए जिसमें चरित्र के साथ व्याकरण हो?
4. संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, और अंग्रेजी शब्दकोश के रचनाकार कौन है?

प्राकृत शिलालेख विवेचन

शिलापट्टों (पत्थरों) पर उत्कीर्ण साहित्य स्थाई होता है। इसी कारण धर्मलिपि, धर्मसंदेश, मानव–जीवन, निर्माण, पशु–पक्षी संरक्षण, समाजदर्शन आदि को पत्थरों बड़े–बड़े मोटे–मोटे, लम्बे–चौड़े आदि आकार वाले पाषाणों पर जो संदेश लिखवाए गए हैं। वे ई. सन् की प्रथम शताव्दी तक शिलापट्ट/शिलालेख आज भी उपलब्ध हैं।

प्राकृत शिलालेखों की विकास यात्रा –

यह तो सत्य है कि प्राचीन समय में जो भी संदेश प्रचारित या प्रसारित किया जाता था। उसे लिपिबद्ध तत्कालीन भाषा में स्थायी सुरक्षा के कारण भूत पाषाण ही होते थे। इसलिए शिलाओं, पाषाणों, पाषाण युक्त गुफाओं, पर्यटक स्थलों के सौन्दर्य के साथ लेख धर्मादेश वहां लिखवाएं जाते थे। प्राकष्त भाषा जन भाषा के रूप में प्रचलित रही है इसलिए जन–मानस को समझने के लिए समय–समय पर शिलाओं पर प्रजाहित, ग्राम कल्याण, राज्य प्रेरक, देश साधक, एवं राष्ट्र हितार्थ हर युग में शिलाओं पर लेख लिखवाए गए। आरंभ में ई.सन् प्रथम शताब्दी तक प्राकृत शिलालेख धर्म–संदेश के वाहक रहे, व्यक्तिगत यशोगान को उनमें स्थान नहीं दिया गया।

अशोक के प्राकृत शिलालेख – अशोक के शिलालेखों को गिरनार शिलालेख भी कहा जाता है। क्योंकि अशोक सम्राट द्वारा ई.पू. 269 के राज्याभिषेक के पश्चात् गिरनार में शिलालेख लिखवाए थे। आपके द्वारा सर्वप्रथम गिरनार में शिलालेख लिखवाने के कारण ही वे शिलालेख गिरनार शिलालेख कहलाए। कालसी, धौली, जौगढ़, मानसेहरा आदि स्थानों में भी अनेकों शिलालेख प्राप्त होते है। वैसे भी **पियदसिना पियदरिसेन** से भी अशोक के माने गए है। प्रियदर्शी उनका उपनाम प्रचलित था।

कालसी शिलालेख का स्थान – अफगानिस्तान से उडीसा तथा हिमालय की तराई (नेपाल) के स्तम्भ रूम्मनदेइ एवं कालसी में हैं। ये मद्रास प्रान्त के मेरूगढी तक व्याप्त है।

गिरनार शिलालेख जौगढ़, जूनागढ़, धौलि आदि गुजरात के पर्वतों की शिलाओं पर उत्कीर्ण हैं।

सम्राट खारवेल के शिलालेख –

खारवेल सम्राट ने उडीसा में जो शिलाओं पर संदेश लिखवाए वे आज भी सुरक्षित है। नन्दिवर्धन एवं खारवेल से पूर्व उदयगिरि पर्वत पर अर्हन्तों के प्रतिबंबों पर अभिलेख हैं। सम्राट सम्प्रति के समय में चेदिवंश के राजाओं द्वारा भी अभिलेख लिखवाए थे।

चेदिवंश के राजा खारवेल–चेदिवंश में जिस राजपुत्र ने शासन किया वह जैनधर्म का अनुयायी था। खारवेल सम्राट होने के साथ साथ चक्वर्ती भी माना जाता था। भुवनेश्वर (उड़ीसा) तीर्थ के उदयोगी की गुफा में प्राप्त शिलालेख से यह ज्ञात होता है। कि मौर्यवंश के पश्चात् सर्वाधिक शिलालेख खारवेल द्वारा पाषाणों पर उत्कीर्ण कराए गए है। खारवेल के शिलालेखों में जो प्रथम पाठ है–वह जैनधर्म में प्रचलित नवकार मंत्र का सुत्र है–**नमो अरहंतानं नमो सवसिधानं**–– एरेन कलिंगाधिपतिना सिरिखारवेल'' द्वारा लिखवाया गया। प्राप्त अभिलेख संख्या में सत्तरह (17) हैं। जो शासन व्यवस्था, धर्मसंदेश युक्त है।

कक्कुक अभिलेख – यह राजस्थान के सुरम्य क्षेत्र जोधपुर से 25 कि. मी. दूर घटयाल नाम के ग्राम में प्राप्त 'कक्कुक' शिलालेख कहा जाता है। ई. सन् 861 वि. सं. 918 का इसे माना गया। इस अभिलेख का प्रारम्भ 'ओं' से होता है जो गाथा छंद में हैं।

अन्य कई स्थानों पर अशोक, खारवेल, सम्प्रति, कनिष्ठ, शातकर्णी आदि द्वारा जो शिलालेख लिखवाए वे सभी प्रायः प्राकृति में हैं।

अशोक के शिलालेख और समाजिक महत्त्व – सम्राट अशोक मौर्यवंश का शासक था, जिसने कलिंग विजय के पश्चात् अपने जीवन को धर्म की ओर मोड़ लिया था। जो सतत् धर्म आस्था में स्थित प्रजाहित, जीव (प्राणी) संरक्षणा, जन कल्याण आदि में लगा हुआ अहिंसक संदेश को महत्त्व देता है। सत्य पर स्थित आत्मसंयम पर बल देता है।जो पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राजमार्ग पर औषधि, फल युक्त, छायादार सघन वृक्ष आदि को लगवाने के कटिवद्ध था। जिसनक माता– पिता की सेवा, स्थविरों का सम्मान बुद्धिवंतों (ज्ञानीजनों–गुणीजनों) के प्रति श्रद्धा, रोग निवारण हेतु चिकित्सालयों को खुलवाया। जहाँ मानव–रोग निदान केन्द्र बनवाए वही पशु–पक्षियों के रोग–निदान के केन्द्र स्थापित किए।

अशोक कालीन समाज – एक ऐसा समाज जो परस्पर में सहभागिता को महत्त्व दे सके ऐसे समाज की स्थापना के अनेक स्थानों पर शिलालेख लिखवाए। उन्होंने अपने एक अभिलेख में लिखवाया– ' मेरी प्रजा मेरी बच्चों के समान है और मैं चाहता हूँ कि सबको इस लोक में और परलोक में सुख–शान्ति

मिले।''

समाज– साधु (सज्जनों का समूह) और असाधु–(दुर्जनों का समूह) समाज में रहने वाले सभी लोग शान्ति प्रिय हो, रे किसी भी तरह से अपने कर्तव्यों–लोगों का यह कार्य है कि वे सदैव प्राणियों को अपनी तरह समझें।

समाज–व्यवस्था– सभ्य समाज में सभी प्रकार से सामंजस्य हो इसके लिए अशोक ने बारह वर्ष के राज्याभिषेक के पश्चात् सम्पूर्ण व्यवस्था में पंचवर्षीय योजना लागू की, जो राज्यों एवं सभी प्रदेशों में समान रूप से हो।

अपव्यय पर रोक– अनावश्यक रूप से अपव्यय न हो। श्रमणों को सम्मान दिया जाए।
दान देने की (जीवन दान देने की) व्यवस्था हो।

(बहुविध धर्माचरण हो बहुविधेधंमचरणे वढिते)

कल्याणकारी सर्वोपरि कार्यों को महत्त्व दिया जाए।

कल्याण में श्रमणों एवं सज्जनों की सहभागिता हो।

अहिंसक वातावरण– अनुदिवसं बहूनि प्राण सत् सहस्रानि आरभिसु सूपाथाय – समाज के बड़े भोज में प्रतिदिन हजारों प्राणियों की हिंसा की जाती है। सूप के लिए (पेय पदार्थ) जो जीव हिंसा वह पहले दो मोर एवं एक मष्ग तक सीमित रहे पश्चात् सर्वत्र ऐसा न हो। पाणा पछा न आरभिसरे। पाप कार्य रोक गए।

चिकित्सा पद्धिति –प्रियदर्शी राजा अशोक ने द्वे चिकिछकता–दो प्रकार की चिकित्सा विधि को महत्त्व दिया।

–मनुसचिकिछा च पसुचिकीछा– (1) मनुष्य चिकित्सा और (2) पशु चिकित्सा।
वृक्षा–रोपण–अशोक ने राजपथ के दोनों ओर हरी वनस्पतियों को लगवाया और रोपने वाली वनस्पतियों को लगवाने का निर्देश दिया। वृछारोपिता–वृक्ष लगाए गए– पशुओं और मनुष्यों

जल संसाधन–पंथेसु कूपा– मार्ग पर कूव खुदवाए गए। प्यासों के लिए जलाशय, वावड़ियों आदि बनवाई गई।

धर्माचरण– धंमचरर्णन भेरी धाखो– धर्माचरण हेतु भेरी घोष कराया। धंम अनुसासनं–धर्म के अनुशासन हो।

मनोरंजन के साधन–हस्ति कीड़ा विमान/यान प्रदर्शन आदि को महत्त्व दिया गया।

राजनायाकों की व्यवस्था– सभी प्रकार की व्यवस्थाओं के लिए अलग अलग विभाग के अलग अलग राजनायकों की व्यवस्था की गई।

इस प्रकार शिलालेख को सन्देश कई तरह से जन भावनाओं के लिए हुए थे।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. गिरनार अभिलेख किसके हैं?
(क) खारवेल (ख) अशोक (ग) सम्प्रति (घ) बुद्ध (ख)
2. खारवेल के अभिलेख किस गुफा में हैं?
(क) हाथी गुफा (ख) सिंह गुफा (ग) राज गुफा (घ) राची गुफा (क)
3. नमों अरहंतानं किसके शिलालेख में है?
(क) अशोक (ख) मौर्य (ग) हाथी गुफा (घ) घटियाल (ग)
4. प्राकृत के सबसे प्राचीन शिलालेख किसके हैं?
(क) सम्प्रति (ख) अशोक (ग) खारवेल (घ) येरुगुडि (ख)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न–

(क) शिलोलेखों पर उत्कीर्ण साहित्य क्या है?
(ख) मेरी प्रजा मेरे बच्चे के समान हैं किसका संदेश है?
(ग) कक्कुक का शिलालेख किस जिले में है?

(घ) खरोष्ठी लिपि के शिलालेख किस भाषा में हैं?

लघुत्तरात्मक प्रश्न–

(क) प्रियदसिना राजा किसे कहा गया है?
(ख) द्वो मोरा एगो मिगो किसके शिलालेख में है?
(ग) अपव्ययता निषेध किसने किया?
(घ) अभिलेख शिलालेख हैं क्या?

आगम कथा एवं चरित्र ग्रन्थ से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

पाइय–भाशा	साहित्य परिचयो
1. **का भाशा?**	**भाशा क्या है?**
भासा सद्द वागोत्थि।	भाषा शब्द वाग् है।
2. **भासा परिवारा का?**	**भाशा परिवार क्या है?**
जुगावेक्खा तिविहा।	युग की अपेक्षा तीन प्रकार का है।
(1) पुरा आरिय भासा	पुरा आर्य भाषा
(2) मज्झ जुग आरीयभाषा	मध्य युग आर्य भाषा
(3) पच्चुण्ण आरिय भासा।	आधुनिक आर्य भाषा।
> का पुरा आरियभासा	**पुरा आर्य भाषा क्या है।**
वेदिग भासा (छंदस भाषा)	वैदिक भाषा/ छान्दस भाषा।
जणसाहारण ववहारो जेसिं अत्थि	जिनका व्यवहार जनसाधारण में है।
> किं पागिदं/पाइयं?	**क्या है प्राकृत?**
पक्किज्जदे जेण सा पयडी ताए भावो	जिससे प्रकृति है उसका भाव प्राकृत है।
सहज–वयण वावारो पयडी तत्थ भवं सा	सहज वचन व्यवहार प्रकृति है उसमें होना प्राकृत एव पागिदं। है।
जण–साहरण–वयण ववसायोत्थि सा एवं पाइयं।	जन साधारण का वचन व्यवसाय प्राकृत है।
जुगोवि पागिदस्स तिण्हि ?	प्राकृत के तीन युग है।
1. पढम जुगो–अस्सिं च अत्थि	प्रथम युग – इसमें है–
सिलालेही, धम्मपदस्स पागिदं, आरिस पागिदं, अस्सघोसस्स णाडगाणं च पगिदं।	शिलालेखी, धम्मपद की प्राकृत, आर्ष प्राकृत अश्वघोष के नाटकों की प्राकृत
> के आरिसा?	**आर्ष कौन–कौन है?**
1. शौरसेनी 2. अद्धमागही 3. पालि	1. शौरसेनी 2. अर्धमागधी 3. पालि।
सौरसेणी–अद्धमागही भाषाए	शौरसेनी अर्द्धमागधी भाषा के
> वयणाणि कस्स	**वचन किसके है?**
महावीरस्स।	महावीर के।
> पालि–भासाए वयणाणि कस्स?	**पालि–भाशा के वचन किसके है?**
बुद्धस्स।	बुद्ध के।
> जिण सुत्ताणं पाइयं णाम किं?	**जैनसूत्रों की प्राकृतों का क्या नाम है?**
सोरसेणी , अद्धमागही	शौरसेनी और अर्धमागधी है।
सोरसेणी–सूरसेणस्स मथुरा खेते विथिण्णा विवहिदा।	शौरसेनी शूरसेन– मथुरा क्षेत्र में प्रचलित खेत्ते थी।
अद्धमागही–अद्ध–मगह–कासि कोसल	अर्धमागधी–अर्धमगध, काशि कौसल क्षेत्र में व्याप्त थी।

पालि–भासा–बुद्धवयणं
अस्स खेतोत्थि पाडलिपुत्तो

> **महारट्ठी पागिदं किं?**

पबंधाणं पाइयं?
कव्वपागिदं।

> **मागही पागिदं किं (पाइयं)**

एसा भासा महाह खेत्ते पचलिदा।
अस्सिं अत्थि रस्स ल, श, ष, सस्स श।
णाडगेसुं अस्स पागिदस्स पनोगोत्थि?

> **का अवभंस–भासा?**

उकार बहुल–अवभंस–भाषा

सण्णा का?

सण्णा अत्थि णाम पुरिस वस्थु
ठाणं च। देवो गच्छइ।
है।

सव्वणामो किं?

सण्णा ठाणे जं तं पहुदि–पजोगो।

सो गच्छइ।

पाइय –साहिच्चो

सुत्ताणि पबंधाणि पमुहाणि गंथाणि
अत्थि अस्सिं साहिच्चे पागिदे
णाडगेसुं च खेत्त–विसेसत्तो
विविह–पगिदाणं पजोगो त्थि।
णाडगेसुं सोरसेणीए बाहुल्लेण सह
अद्धमागही मागही महरट्ठी पेसाची
चूलिगा–सगारी–चण्डाली–पहुदी
पागिदा अत्थि।

भासा–विसेस–साहिच्चो

1. सोरसेणी 2. अद्धमागही 3. महरट्ठी
4. मागही 5. अवभंसो वि।

(क) सोरसेणी–साहिच्च– साहिच्चयारो

1. सोरसेणीए पमुह गंथो को?
छक्खंडागमो त्थि।
2. छक्खंडागमे किं ?
छक्खंडागमे छक्खडा ते।
3. ते के?
जीवट्ठाणं, खुद्दाबंधो, बंधसामित्त विचय
वेदणा, वग्गाणा, महाबंधो या।
4. कोत्थि अस्स रयणायारो?
धरसेणाइरियोत्थि

पालि भाषा – बुद्धवचन,
इसका क्षेत्र पाटलीपुत्र माना जाता है।

महाराष्ट्री प्राकृत क्या है?

प्रबंधों की प्राकृत।
काव्यों की प्राकृत।

मागधी प्राकृत क्या है?

यह भाषा मगध क्षेत्र में प्रचलित थी।
इसमें र का ल और श, ष, स का श।
नाटकों में इस प्राकृत का प्रयोग है।

अपभ्रंश भाशा क्या है?

उकार बहुला अपभ्रंश भाषा है।

संज्ञा क्या है?

नाम, पुरूष (व्यक्ति) वस्तु एवं स्थान
की संज्ञा है संज्ञा कहते हैं देव जाता

सर्वनाम क्या है?

संज्ञा के स्थान पर जं तं आदि का
प्रयोग सर्वनाम है।
वह जाता है।

प्राकृत साहित्य

सूत्र, प्रबंध प्रमुख आदि ग्रंथ
इस प्राकृत के साहित्य में हैं।
नाटकों में क्षेत्र विशेष से।
विविध प्राकृतों का प्रयोग है।
नाटकों में शौरसेनी की बहुलता के साथ
अर्धमागधी, मागधी, महाराष्ट्री, पैशाची
चूलिका, शकारी एवं चण्डाली आदि
प्राकृत हैं।

भाशा विशेष साहित्य

1. शौरसेनी 2. अर्धमागधी 3. महाराष्ट्री
4. मागधी और अपभ्रंश।

(क) भौरसेनी साहित्य एवं साहित्यकार।

1. शौरसेनी का प्रमुख ग्रंथ कौन है?
षट्खंडागम है।
2. षट्खण्डागम में क्या है?
षट्खण्डागम में छह खण्ड हैं।
3. वे कौन–कौन हैं?
जीवस्थान, क्षुद्रकबंध, बंधस्वामित्वविचय,
वेदना, वर्गणा और महावंध।
4. इसके रचनाकार कौन है?
धरसेनाचार्य हैं।

5. अस्सिं कस्स टीगा णाम किं?

टीगा णाम धवला।
6. अस्स को रयणायारो?
वीरसेणाइरियोत्थि।
7. टीगाए सेली किं?
टीगाए पागिद सक्किदमिस्सिद–सेली।
8. कसाय पाहुड कस्य रयणा?
गुणधराइरियस्स रयणा अत्थि।
9. कसाय–पाहुडस्स के अहियारा?
सोलहाहियारा।
10 अहियाराणं णाम किं?
पेज्जदोसो पयडी ठिदी अणुभागो
पदेसो बंधगो वेदगो उवजोगो
चदुट्ठाणं विजणं दंसण–मोहोवसमणा।
दंसण–मोहोखमणा संजमासंजम–लद्धी
संजम–लद्धि चारित्तमोहोवसमणा
चारित्तमोहखवणा य।
11. कसायपाहुडस्स अवरोणाम किं?
पेज्ज–दोस–पाहुडं
12. पेज्जसद्दस्स अत्थो किं?
पेज्जसद्दस्स अत्थोत्थि रागो।
13. महाबंधस्स रयणायारो को?
आयरिय–भूदबली
14. महाबंधस्स अवरो णाम किं?
महाधवलो त्थि।
15. अस्स अहियारा के?
पयडि–ठिदी–अणुभाग
पदेसबंधोत्थि चदुअहियारा।
16. कसायपाहुडस्स टीगा णाम किं?
णाम जयधवला अत्थि।

आइरिय–कुंदकुंदस्स साहिच्चो

एसोत्थि अज्जप्प–साहिच्चस्स
पमुह पणेदा।
1. कुंदकुंदस्स कत्थ अहेसि?
कोण्डकुंदपुरस्स वासी दाहिणस्स
2. मादु–पिदुस्स णाम किं?
मादाए णाम सिरिमदी पिदुस्स
करमंडु त्थि।
3. कुंदकुंदस्स कस्य संघस्स पवट्टगो त्थि।
मूलसंघस्स
4. अस्स रयणाओ का?
पंचत्थिकायो समयसारो पवयणसारो,

5. इसकी टीका किसकी है और क्या नाम है?
टीका का नाम धवला है।
6. इसके कौन रचनाकार है?
वीरसेनाचार्य हैं।
7. टीका की शैली क्या है?
टीका में प्राकृत–संस्कृत मिश्रित शैली है।
8. कसाय पाहुड किसकी रचना है?
गुणधराचार्य की रचना है।
9. कसायपाहुड के कितने अधिकार है?
सोलह अधिकार हैं?
10. अधिकारों का क्या नाम है?
पेज्जदोस, स्थिति, अनुभाग
प्रदेश, बंधक, वेदक, उपयोग,
चतु:स्थान, व्यंजन, दर्शनमोहोपशमना,
दर्शनमोहक्षपणा, संयमासंयम लब्धि,
संयमलब्धि, चारित्रमोहोपशमना
और चारित्रमोहक्षपणा हैं।
11. कसाय पाहुड का दूसरा नाम क्या है?
पेज्ज–दोष पाहुड।
12. पेज्ज शब्द का अर्थ क्या है?
पेज्ज शब्द का अर्थ है राग।
13. महाबंध के रचनाकार कौन हैं?
आचार्य भूतबली।
महाबंध का दूसरा नाम क्या है?
महाधवला है।
15. इसके अधिकार कितने हैं?
प्रकृति, स्थिति, अनुभाग
और प्रदेशबंध ये चार अधिकार हैं।
16.कषायपाहुड टीका का नाम क्या है?
जयधवला नाम है।

आचार्य कुन्दकुन्द का साहित्य

आचार्य कुन्दकुन्द अध्यात्म साहित्य के प्रमुख प्रणेता हैं।
1. कुंदकुंद कहां के थे?
आ.कुंदकुंद दक्षिण के कोण्डकुंदपुर के निवासी थे।
2. इनके माता–पिता का नाम क्या था?
माता का नाम श्रीमती और पिता का नाम करमंडु णाम था।
3. कुंदकुंद किस संघ के प्रवर्तक थे?
मूलसंघ के।
4. इनकी रचनाएँ कौन सी हैं?
पंचास्किाय, समयसार, प्रवचनसार

णियमसारो, रयणसारो, वारस–अणुवेक्खा,	नियमसार, रयणसार, बारस अनुप्रेक्षा,
दंसण–चारित्र–सुत्त–बोह–भाव–मोक्ख–लिंग	दर्शन, चारित्र, सूत्र, बोध, भाव, मोक्ष,
सील पाहुडं (अट्ठपाहुडं) सिद्धभत्ती सुद–चारित्र	लिंग,और शीलपाहुड (अष्टप्राभृत) सिद्धभक्ति, श्रुत,चारित्र
जोग–आइरिय–णिव्वाण–पंचगुरूभत्ति त्थि	योग, आचार्य, निर्वाण, पंचगुरूभक्ति एवं
थोस्सामि थुदि त्थि वि।	थोस्सामि थुदि।
5. पंचस्तिकाए किं?	5. पंचास्तिकाय में क्या है?
काल–वादिरित्तो, जीव–पोग्गल	काल के अतिरिक्त जीव, पुद्गल
धम्म–अधम्म, ओगास, दव्वाणं	धर्म, अधर्म, आकास द्रव्यों को
णिरूपणं। इमेत्थि अत्थिकाया/बहुप्पदेसी	निरूपण है। ये अस्तिकाय ही बहुप्रदेशी हैं।
6. समयसारो किं?	6. समयसार क्या है?
(क) समयसारो त्थि सिद्धंत–	(क) समयसार सिद्धान्त एवं आत्म–
अप्प–विसुद्ध– भावाणं गंथो त्थि।	विशुद्धभावों का ग्रंथ है?
(ख) के अहियारा अस्सि?	(ख) इसमें कितने अधिकार हैं?
जीवाजीवाहियारो कत्ताकम्माहियारो	जीवाजीवाधिकार, कर्तृकर्माधिकार,
पुण्ण–पावाहियारो आसवाहियारो	पुण्य–पापाधिकार, आस्त्रवाधिकार,
संवराहियारो णिज्जरहियारो	संवराधिकार, निर्जराधिकार
बंधाहियारो मोक्खाहियारो	बंधाधिकार, मोक्षाधिकार,
णाण–अहियारो सियादवाद–दिट्ठि	ज्ञानाधिकार, और स्याद्वाद दृष्टि
अहियारो (दसाहियारा)	अधिकार ये दश अधिकार हैं।
(ग) पवयआरो किं?	(ग) प्रवचनसार क्या है?
1. पवयणसारो दंसणिग–गंथो।	1. प्रवचनसार दार्शनिक ग्रंथ है।
2. किं अत्थि अस्सि?	2. इसमें क्या है?
णाण–णेय–चारित्त–विसया अस्सि।	इसमें ज्ञान, ज्ञेय, और चारित्र के विषय हैं।
(घ) णियमसारों किं?	(घ) नियमसार क्या है?
–णियमसारे समणाणं आवस्सग–	नियमसार में श्रमणों के आवश्यक कर्तव्यों कत्तव्वाणं
विवेयणं च।	का विवेचन है।
णियमस्स किं अत्थो?	नियम का क्या अर्थ है?
णियमो त्थि मोक्खमगो	नियम मोक्षमार्ग है।
सम्मद्दसणण्णाण–चरित्ताणि	सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र रूप
मोक्खमग्गो जस्सिं सो णियमो।	जिसमें है वह नियम है।
(ङ) रयणसारो किं?	रयणसार क्या है?
अस्सि अत्थि सावग–समणाणं	इसमें श्रावक और श्रमणों के
रदणतयस्य विवेयणं।	रत्नत्रय का विवेचन है।
(च) बारस अणुवेक्खाए किं?	बारस अणुवेक्खा में क्या है?
अज्झप्पदिट्ठिणा अकधुव–	इसमें अध्यात्म दृष्टि से
अणिच्च–असरण–एगत–अण्णत्त	अध्रुव, अनित्य, अशरण, एकत्व, अन्यत्व
संसार–लोग–असुचित्त–आसव–संवर–	संसार, लोक, अशुचित्व, आस्रव
णिज्जरा–धम्म–बोहि–दुल्लभ–	निर्जरा, धर्म और बोधिदुर्लभ
भावणाणं अणुंचिंतणं।	भावनाओं का अनुचिंतन।
दंसण–पाहुडे किं	दर्शन पाहुड क्या है?

दंसणं सम्मदंसणं च	दर्शन अर्थात् सम्यग्दर्शन है।
तं विणा णत्थिझ णिव्वाणं।	उसके बिना निर्माण नहीं है।
चारित्त–पाहुणे किं	चारित्र पाहुड में क्या है?
सम्मत्तचरणं संयमचरणं च।	इसमें सम्यक्वचरण और संयमचरण है।
सुत्त–पाहुडे किं?	सुत्र पाहुड में क्या है?
आगमाणं रहस्सो त्थि।	आगमों का रहस्य है।
बोह–पाहुडे किं?	बोध पाहुड में क्या है?
बोहेत्थि आयदणं चइयगेहं	इस बोध पाहुड में आयतन, चैत्यगृह,
जिणपडिमा दंसणं जिणबिंबो	जिनप्रतिमा, दर्शन, जिनबिंब, जिनमुद्रा,
जिणमुछा अप्पणाणं देवोतित्थो	आत्मज्ञान,देव, तीर्थ, अर्हंत और
अरहंतो पव्वज्जा वि।	प्रव्रज्या है।
भावपाहुडे किं?	भावपाहुड में क्या है?
चित्तसुद्धी	चित्तशुद्धि।
मोक्खपाहुडे किं?	मोक्षपाहुड में क्या है?
अप्प–ससृवो तस्स भेदा वि।	आत्म स्वरूप और उसके भेद हैं।
लिंगपाहुडे किं?	लिंगपाहुड में क्या है?
समण–धम्म–णिरूवणं।	श्रमण धर्म का निरूपण है।
सीलपाहुडे किं?	शीलपाहुड में क्या है?
जीवदया इंदियणिग्गहो सच्चं	इसमें जीवदया, इन्द्रियनिग्रह
अत्थेरो बंहचेरो संतोसो सम्मदंसणं	सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, संतोष, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान
सम्मणाणं तव च अत्थि	और तप है।
जदि उसहो तस्स साहिच्चो	यतिवृषभ और उनका साहित्य
करणाणुजोगे जदिउसहस्स	करणानुयोग में यतिवृषभ का
महत्तपुण्णट्ठाणं।	महत्त्वपूर्ण स्थान है।
जदिउसहणंथस्स णाम किं?	यतिवृषभ के ग्रंथ का नाम क्या है?
पुराण–इदि वुत्त–भूगोल–खगोलस्स	पुराण, इतिहास, भूगोल, खगोल आदि।
पहुदीए गंथो त्थि 'तिल्लोयपण्णत्ती'	इनका ग्रन्थ तिलोयपण्णत्ति है।
भगवदी–आराहणा कस्स	भगवती आराधना किसकी है?
शिवारियस्स/सिवज्जस्स	शिवार्य की है।
सिवज्जस्स अण्ण नाम किं?	शिवार्य के अन्य नाम क्या हैं?
सिवकोडी, सिवगुत्तो, सिवणंदी वि	शिवकोटि, शिवगुप्त और शिवनंदि भी है।
अस्सिं गंथे किं?	इस ग्रंथ में क्या है?
सल्लेहणा समाहि संथारादि	सल्लेखना, समाधि, संस्तारा आदि।
बिसथाणं विहद–विदेयणं।	विविध विषयों का इसमें विवेचन है।
कत्तिगेयाणुवेक्खा कस्स?	कार्तिकेयानुप्रेक्षा किसकी है।
सामि–कत्तिगेयस्स रयणा।	स्वामी कार्तिकेय की रचना है।
सिद्धंतचक्कवदी उवाही कस्स?	सिद्धांत चक्रवर्ती उपाधि किसकी है?
णेमिचंदाइरियस्स।	आचार्य नेमिचन्द्र की।
णेमिचंदस्स रयणाओ णाम किं?	नेमिचंद की रचनाओं का नाम क्या है?

दव्वसंगहो गोम्मट्टसारो तिलोयसारो	द्रव्यसंग्रह, गोम्मटसार, त्रिलोकसार
लद्धिसारो सवणासारो त्तु	लब्धिसार और क्षपणासार है।
दव्वसंगहे किं?	द्रव्य संग्रह में क्या है?
जीवाजीव दव्व णिसवणं च	जीव अजीव द्रव्य का निरूपण
अट्ठावण गाहाए सिद्धंतदिट्ठिणा।	अट्ठावन गाथाओं में सिद्धांत की दृष्टि से है।
कम्मपयडि कस्स?	कर्मप्रकृति किसकी है?
सिवसम्मस्स।	शिवशर्म की।
सम्मइसुत्तं कस्स?	सन्मतिसूत्र किसका है
आइरियसिद्धसेणस्स।	आचार्य सिद्धसेन का।
अस्सिं किं अत्थि?	इसमें क्या है?
अत्थि अस्सिं च णय णिक्खेव	इसमें है नय, निक्षेप
सामण्ण–विसेस–सदासद–पहुदीए	सामान्य, विशेष, सत्–असत्
दंसणिग–विवेयणं। एसो त्थि।	आदि का दार्शनिक विवेचन। यह
54+43+63=167 गाहाजुदा।	54+43+63=167 गाथा वाला ग्रंथ।
उवासयज्झयणं कस्स?	उपास्काध्ययन किसका है?
आइरिय वसुणंदिणो रयणा।	आचार्य वसुनन्दि की रचना है।
अद्धमागही–साहिच्चो	अर्धमागधी साहित्य
महावीर–णिव्वाणं पच्छा 150	महावीर निर्माण के पश्चात् 150
विविह वायणाए जादा	विविध वाचनाएँ हुई
1. बलभी–वायणा वीर निर्माण 980	बलभी वाचना 980वी.नि.
अस्स पमुह आइरियोत्थि	इसके प्रमुख आचार्य
देवद्धिगणिश्वमासमो।	देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण थे।
2. माहुरी वायणा।	2. माथुरी वाचना।
3. पाडलिपुत्त–वायणा	3. पाटलि पुत्र वाचना।
2. अद्धमागही पागिद भासाए गंथाणि के?	2. अर्धमागधी प्राकृत भाषा के ग्रन्थ कितने हैं?
दुवालसांणि उवंगाणि छेदसुत्ताणि	बारह अंग, उपांग, छेदसूत्र
मूलसुत्ताणि पकिण्णिगा चूलिगा?	मूलसूत्र, प्रकीर्णक और चूलिका हैं।
अंग गंथाणि णाम काणि?	अंग ग्रंथों के नाम कौन हैं?
आयारो सूयगडो ठाडांगो समवायंगो	आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग
वियाह पण्णत्ती णायाधम्मकहा	व्याख्याप्रज्ञप्ति, ज्ञाताधर्मकथा।
उवासगदसाओ अंतगडे अणुत्तरोवपादो	उपासकादशा, अंतकृत, अनुत्तरोपपाद
पण्ह–वागरणं विवागसुत्तं दिट्ठिवादो य।	प्रश्नव्याकरण विपाकसूत्र और दृष्टिवाद।
उवंगा के?	उपांग कितने है?
ओववादिगो रायपसेणियो	औपपादिक, राजप्रशेनीय, जीवाभिगम।
जीवाभिगामो सूरियपण्णत्ती	सूर्यप्रज्ञप्ति,
जबूदीवपण्णत्ती चंदपण्णति	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चंद्रप्रज्ञप्ति
कप्पिया कप्पावडंसियाओ	कल्पका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका

पुष्फिया पुष्फचूला वण्हिदसाओ	और वृष्णिदशा।
छेदसुत्ताणि णाम?	छेदसूत्र नाम?
णिसिहो महाणिसीहो ववहारो	निशीथ, महानिशीथ, व्यवहार
दसासुपक्खंधो आयारदसा	दशाश्रुतस्कंध, आचारदशा
कप्पसुत्तं जीवकप्पं।	कल्पसूत्र और जीतकल्प।
मूलसुत्ताणि णाम?	मूलसूत्र के नाम?
उत्तरज्झयणं आवस्सयो	उत्तराध्ययन, आवश्यक
दसवेयालियो पिण्डणिज्जुति	दशवैकालिक और पिण्डनिर्युक्ति।
पइण्णगा णाम–	**त्रकीर्णक नाम**
चदुसरणं आउरपच्चक्खाणं	चतुःशरण, आतुर प्रत्याख्यान,
महापच्चक्खाणं भत्तपइण्णा	महाप्रत्याख्यान, भक्तिप्रतिज्ञा
तंदुलवेयालियो संथारगो	तंदुलवैतालिक, संस्तारक
गच्छायारो गणिविज्जा	गच्छाचार, गणिविद्या,
देविंदथवो मरणसमाही कि।	देवेन्द्र स्तव और मरणसमाधि।
टीगा भास–चुण्णी पहुदी साहिच्चो	टीका, भाष्य, चूर्णि आदि साहित्य।
णिज्जुत्ती–आयार–सूयगड–सुज्जपण्णत्ति	नियुक्ति,आचारांग, सूत्रकष्तांग,सूर्यप्रज्ञप्ति
ववहार–कप्प–दसायुक्खंध उत्तरज्झयण	प्रज्ञप्ति,व्यवहार,कल्प,दशाश्रुतस्कंध,
आवस्सगो दसवेयालियो इसिभासिदा	आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन
एदेसिं णिज्जुत्तीणं कत्ता को?	इन निर्युक्तियों के कर्त्ता कौन?
भद्दबाहुत्थि।	भद्रबाहु हैं।
चुण्णी–	चूर्णि
आयार–सूयगड–वियाहपण्णत्ति	आचारांग, सूत्रकष्तांग,व्याख्याप्रज्ञप्ति
कप्प–व्यवहार–णिसीह पंचकप्प	कल्प,व्यवहार,निसीथ, पंचकल्प।
दसासुय–जीदकल्प–जीवाभिगम	दशाश्रुतस्कंध, जीतकल्प, जीवाभिगम
जम्बूद्वीप–पण्णत्ति–उत्तरज्झयण	जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति, उत्तराध्ययन
आवस्सग–दसवेयालिय–णंदी	आवश्यक,दशवैकालिक, नन्दी।
अणुजोगदुवारोत्थि	और अनुयोगद्वार ये चूर्णिया।
इमेत्थि संकिकद–पागिद	संस्कृत–प्राकृत मिश्रित हैं।
मिस्सिदा।	
अस्स कत्ता–जिणदासगणि महत्तरो	इसके कर्ता जिनदासगणि महत्तर है।
अंगाणं किं सारो?	अंगो का सार क्या?
आयारो	आचार
आयारसारो किं	आचार सार क्या है?
अणुजोगात्थो तस्स परूवणाॅ	जो अनुयागार्थ उसकी प्ररूपणा।
पबंधाणं पबंधो किं?	प्रबंधो का प्रबंध क्या है?
सुत्त–छंदवद्ध–णिरूवणं	सूत्र, छंदबद्ध निरूपण प्रबन्ध है।
पागिदे पबंधा के के?	प्राकृत में प्रबन्ध कौन–कौन है?
महाकव्व–खंडकव्व–चरित्त	महाकाव्य, खण्डकाव्य, चरित्र, कथा

कहा–पाडग–सदषा–थुदि–मुत्तग	नाटक, सट्टक, स्तुति, एवं मुक्तक आदि।
पागिदे महाकव्वं कस्स।	प्राकृत में महाकाव्य किसका?
पवरसेणस्स सेदुबंधो	प्रवरसेन का सेतुबंध।
वाग–पदिराजस्स गउडवहो	वाक्पतिराज का गउडवहो
हेमचंदस्स दुवासय कव्वं	हेमचंद का द्वयाश्रय काव्य
कोउहलस्स लीलावई	कोतूहल का लीलावई
उदयचंदस्स महाकाव्य विरागसेतु	उदयचंद के महाकाव्य विरागसेतु
वीरब्भुदयं, जोगिंद जोग बंधो	वीरभ्युदय और जोगिंद जोग बंधो।
खण्डकव्व	खण्डकाव्य
कंसवहो कस्स?	कंसवहो किसका?
रामपाणिवादो खंडकाव्यं	रामपाणिवाद का खण्डकाव्य
उसाणिरूद्धो कस्स रयणा?	उषानिरूद्ध किसकी रचना है?
रामपाणिवादो	रामपाणिवाद
भिंगसंदेसो कस्स?	भृंग संदेश किसका है?
अस्स रयणायारो को णो उल्लिहिदो।	इसका रचनाकार कौन उल्लेख नहीं।
चरित्त–कव्वं	**चरित्र–काव्य**
चरित्त कव्वे किं	चरित्रकाव्य क्या है?
अस्सिं अत्थि पोराणिग इदिवुत्ताहि	इसमें पौराणिक इतिवष्त आदि।
तिसट्ठि पुरिसाणं चरिदं।	तिरेसठ शलाका पुरूषों के चरित हैं।
पउमचरियं कस्स रयणा?	पउमचरियं किसकी रचना है?
विमलसूरिणो रयणा एसा	विमलसूरी का रचना है। यह
रामचरित्तस्स पमुह कव्वं।	रामचरित्र प्रधान काव्य है।
सुरसुंदरि चरिय कस्स?	सुरसुन्दरी चरियं किसका है?
इणंचरियं पेमक्खाणं।	यह चरितकाव्य प्रेमाख्यान हैं।
अस्य कत्ता–धणेसरसूरी।	इसके कर्ता धनेश्वर सूरि है।
सुपासणाह चरियं कव्व?	सुपार्श्वनाथचरित्र किसका है।
लक्खण गणिणो रयणा।	यह लक्षणगणि की रचना है।
सिरिविजयचंद केवलिचरियं कस्स?	सिरिविजयचंद केवलिचरियं किसका है।
चंदपहमहत्तस्स रयणा।	चद्रप्रभ महत्तर की रचना हैं।
महावीरचरियं कस्स–	महावीरचरियं किसका?
णेमिचंदसूरिस्स रयणा।	नेमिचंद्रसूरि की रचना है।
सुदंसणाचरियं कस्स	सुदंसणचरियं किसका?
देविंदसूरिस्स रयणा।	देवेन्द्रसूरि की रचना है।
कुम्मापुत्तचरियं कस्स?	कुम्मापुत्र किसकी?
अणंतहंसस्स रयणा।	अनंतहंस की रचना है।

चउप्पण महापुरिसचरियं कस्स?
एसोत्थि विसालचरियं गंथं।

जंबूचरियं कस्स?
गुणपालमुणिणो रयणां।

रयणचूडरायचरियं कस्स?
णेमिचंदसूरीणो रयणा।
सिरिपासणाहचरियं कस्स?
गुणचंदगण्ढिणो रयणा।

कुवलयमाला कस्स?
एस चंपूकव्वोत्थि। अस्स
कत्ता अत्थि उज्जोयणसूरि

गाहासत्तसई कस्स?
एसा अत्थि मुत्तग–रयणा। आए
सत्त–सद–मुत्तगा अत्थि। अकादो।

वज्जालग्गं कस्स?
जयवल्लभसंकलिद मुत्तगकव्वं।
काव्य।

विसमवाण लीला कस्स?
आणंदवड्ढयस्स रयणा।

पगिद पुक्करणी कस्स?
अस्स संकलण कत्ता
जगदीसचंडो।

वेरग्ग–सदगं कस्स?
णो णायदि–को वि
वेरग्गरसायण पकरणं कस्स?
लच्छीलाभगणिणो अस्स रयणायारो।

धम्मरसायणं कस्स?
पउमणंदिमुणिजो
उवसग्गहरथोदो कस्स
भद्दबाहुओ त्थि अस्स रयणासारो।
अजिय संतिथयं कस्स?
णंदिसेणस्स रयणा
ससद चेइय–थवं कस्स।
देविंदसूरिणो

चउपन महापुरिस चरियं किसका है।
यह विसालचरित्र ग्रंथ है।

जंबूचरियं किसकी है?
गुणपालमुनि का रचना है।

रयणचूडरायचरियं किसकी है?
नेमिचंदसूरि की यह रचना है।
सिरिपासणाह चरियं किसकी है?
गुणचंदगणि का।

कुवलयमाला किसकी?
यह चम्पूकाव्य है। इसके
कर्त्ता उद्योतनसूरि है।

गाहासत्तसई किसकी रचना?
यह मुक्तक रचना किसकी है।
यह अज्ञात है। यह सात सौ मुक्तक का ग्रंथ

वज्जालग्ग किसका?
जयवल्लभ का संकलित ग्रंथ मुक्तक

विसमवाणलीला किसकी?
आनंदवर्धन की रचना है।

प्राकृत पुष्करणी किसकी?
इसके संकलन कर्ता डॉ. जगदीश चंद
हैं।

वैराग्यशतक किसका?
यह अज्ञात कवि की रचना।
वैराग्य रसायन प्रकरण किसका।
लक्ष्यीलाभगणि इसके रचनाकार हैं।

धम्मरसायन किसका?
पद्मनंदी मुनि
उपसर्गहरस्तोत किसका?
इसके रचनाकार भद्रबाहु हैं।
अजितशान्तिस्तव किसका?
यह नंदिसेन की रचना है।
शाश्वत चैत्य स्तव किसका?
देवेन्द्रसूरि का।

णिव्वाण कंडो कस्स	निर्माण काण्ड किसका?
अस्स कत्ता को णस्यिपमाणं	इसके कर्ता का प्रमाण नहीं।
कप्पूरमंजरी सट्टको कस्स?	कर्पूरमंजरी सट्टक किसका?
राजसेहरो त्थि अस्स कत्ता।	राजशेखर इसके कर्ता हैं।
चंदलेहा कस्स रयणा?	चंद्रलेखा किसकी रचना है?
कवि सद्ददासो	कवि रूद्रदास इसके कर्ता है।
आणंदसुन्दरी कस्स?	आनंद सुन्दरी किसकी है?
धणस्साल कवि त्थि रयणाकारो।	धनश्याम कवि इसके रचनाकार है।
रंभामंजरी कस्स?	रम्भामंजरी किसकी?
राजसेहरस्स रयणा।	राजशेखर की रचना।
सिंगार मंजरी कस्स?	श्रृंगार मंजरी किसकी।
विस्सेसरस्स रयणा।	विश्वेश्वर की रचना है।
कहा–साहिच्चो त्थि पुरा।	था साहित्य
तरंगवदीए किदीए रयणाकारो को?	तरंगवती कृति के रचनाकार कौन?
णत्थि सा उवलद्धा।	इसका नामोल्लेख नहीं।
वसुदेवहिंडी रयणा कस्स।	वसुदेवहिंडी किसकी?
संघदासगणिणो रयणा।	संघदास गणि की रचना हैं।
80 लंभगे।	80 लंभक है।
समराइच्चकहा कस्स?	समराइच्चकहा किसकी?
हरिभद्दसूरिणो रयणा।	हरिभद्र सूरि की रचना है।
धुत्तक्खाणं कस्स?	धूर्ताख्यान किसका?
हरिभद्दस्स	हरिभद्र का।
णिव्वाण लीलावई कस्स?	नर्वाणलीलावति किसकी?
जिणेससूरिणो रयणा।	जिनेश्वर सूरि की रचना है।
कहाकोसपकरणं कस्स?	कथाकोस प्रकरण किसकी?
जिणेसर सूरिणो रयणा।	जिनेश्वर सूरि की रचना।
संवेगरंगसाला कस्स?	संवेगरंगशाला किसकी?
जिणेसर सूरिणो रयणा।	जिनेश्वर सूरि की रचना।
णाणपंचमीकहा कस्स?	ज्ञान पंचमी की कथा किसकी?
महेसरसूरिणो रयणा।	महेश्वरसूरि की रचना है।
कहारयण कोसो कस्स?	कहारयणकोस किसकी?
गुणचंदस्स रयणा।	गुणचंद की रचना है।
णम्मदासुंदरीकहा कस्स?	नर्मदा सुन्दरी कथा किसकी है?
महिंदसूरिणो रयणा।	महेन्द्रसूरि की रचना है।
कुमारपाल पडिवो हो कस्स?	कुमारपाल प्रतिबोध किसका है
सोमपहसूरिणो रयणा।	सोमप्रभसूरि की रचना है।
अक्खाणमणि कोसो कस्स?	आख्यानमणि कोस किसका?
णेमिचंद सूरिणो रयणा।	नेमिचन्द्रसूरि की रचना।
जिणदत्तक्खाणं कस्स?	जिनदत्ताख्यान किसकी?
सूमदिसूरिणो रयणा।	सुमतिसूरि की रचना है।
सिरिसिरिवालकहा कस्स?	सिरिसिरि वालक कहा किसकी
वज्जसेण सूरिस्स रयणा।	वज्रसेन सूरि की रचना।

रयणसेहर–विवकहाए कत्ता को? जिणहरिस–सूरिणो रयणा। महिपालकहा कस्स? वीरदेवगणिस्स किदी। पाइअ–कहासंगहो कस्स? पउमचंद सूरिणो रयणा।	रयणसेहाणिव कहा के कर्ता कौन? जिनहरिस सूरि की रचना है। महिपाल कथा किसकी है। वीरदेव गणि की कषति है। पाइअ–कहा संगहो किसकी? पद्मचंद सूरि की रचना है।

वागरणं

वागरणेत्थि लिंग–वयणं काल– विवेयणेण सह णाम णे वादिगा (अव्वया) अक्खादिगा(नाम धाऊ) ओवसग्गिगा (उवसग्गा परि–अणु–अव पहुदी उवसग्ग– संजोगेणं च णिप्पुण्णा–धाऊ) मिस्सा (किदंत–किरिया जुदा) वण्णागमो लोवो पयडिभावो वण्णवियारो (संधि) णाम समासादि–सहिदा सद्दाणुसासणं वागरणं च।	लिंग, वचन, काल विवेचन के साथ नाम नैपालिक (अव्यय) अक्षादि नाम धातु औपसर्गिक प्र परि असु, अव आदि उपसर्ग के संयोग से निष्पन्न धातु कृदंत क्रिया युक्त व्याकरण वर्णागम युक्त होता है। इसमे लोप, प्रकृतिभाव, वर्णविचार, नाम, समासादि सहित शब्दानुशासन भी होता है।
पगिद–सुत्त–गंथेसुं छक्खंडागम– धवलाटीका आयारंग–ठाणंग–पहुदीए वागरणं च अत्थि। सद्दाणुसासणं च अणेग विह वागरणं रचिदं पाइयं वगरण–कारेहिं च।	प्राकृत सूत्र ग्रंथों, छक्खंडागम, धवला टीका, आचारांग, स्थानांग आदि में भी व्याकरण की। शब्दानुसासन युक्त अनेक प्रकार के प्राकृत व्याकरण व्याकरणकारों द्वारा बनाए गए हैं।

पगिद–लक्खणं किं कस्स?	**प्राकृत लक्षण किसकी रचना है?**
पुरा पागिद वावारणं। अस्स कत्ता चंडकवि त्थि। अस्सिं च अत्थि आरिस पजोगो।	यह पुरा प्राकृत व्याकरण है। इसक कर्त्त चंदकवि है। इसमें आर्ष प्रयोग हैं।
पागिद–पगासो कस्स? अस्स कत्ता वररूचि त्थि। वररूचि किद–पागिद–पगास– उवरिं मणोरभा टीगा पागिद मंजरी पागिद संजीवणी सुबोहिणी वि।	प्राकृत प्रकाश किसका? इसके कर्ता वररूचि है। वररूचि का प्राकृत प्रकाश पर मनोरमा टीका, प्राकृत मंजरी, प्राकष्त संजीवनी एवं सुबोधिनी भी है।
सिद्ध–हेम–सद्दाणुसासणं कस्स?	**सिद्धहेमशब्दानुशासन किसका?**
हेमचंदस्स। अस्सिं अज्झाया अंतिम अज्झयणं च पागिदणं। मूलेत्थि महरट्टी। सोरसेणी– मागही पेसाची अवभंस–सुत्त सहिदा वागरणे देसी सद्दाणं पजोगो वि।	हेमचंद का। इसमें आठ अध्याय है। इसके अंतिम अध्ययन प्राकृतों का हैं इसके मूल में महाराष्ट्री है। शौरसेनी– मागधी, पैशाची, अपभ्रंश आदि के सूत्र सहित इसमें देशी शब्दों के नियम है।
पागिद–सद्दाणुसासणं कस्स? तिविक्कमदेवस्स सडभासा चंदिगा कस्स?	प्राकृत शब्दानुशासन किसका? त्रिविकम देव का। षडभाषा चंद्रिका किसकी?

सिद्धंतकोमुदी सरिच्छो वागरणं अस्सिं विविध वागरण णियमाणं संकलणं अत्थि।	यह सिद्धांत कौमुदी सदृश व्याकरण है। इसमें विविध व्याकरणों के नियमों का उल्लेख है।
पागिद रूवावतारो कस्स?	प्राकृत रूपावततार किसका?
सिंहराजस्स वागरणं।	सिंह राज की व्याकरण।
पागिद सव्वस्सो कस्स?	प्राकृत सर्वस्व किसका?
एस माकण्डेयस्स वागरणं	यह माकण्डेय का व्याकरण है।
वागरणं सोरसेणी पागिदो कस्स?	व्याकरण शौरसेनी प्राकृत में किसकी रचना।
उदयचंदस्स रयणा। अण्णरयणा बालरूप पागिद–वागरणं पागिदोदयो हेमपागिद–वागरणं पहुदी रयणा वि आस।	उदयचंद का। इनकी अन्य रचनाए बालरूप प्राकृत व्याकरण। प्राकृतोदय, हेमप्राकृत व्याकरण। आदि रचनाएं हैं।
छंद सत्थं	**छंद शास्त्रम्**
वुत्तजादि समुच्चयं कस्स?	वष्तजाति समुच्चय किसका है?
विरहंक कवि अस्स कत्ता।	इसके कर्ता विरहंक कवि हैं।
कवि दप्पणं कस्स?	कवि दर्पण किसका है।
को रयणायारो णो णायदे।	कौन रचनाकार ज्ञात नहीं।
गाहालक्खणं कस्स?	गाहालक्षण किसका?
णंदिताडस्स रयणा	यह नंदिताड्य की रचना है।
पगिद–पेंगलं कस्स?	प्राकृत पैंगल किसका?
अस्स कत्ता अण्णादा।	इसका कर्त्ता अज्ञात है।
पागिद–अवभ्रंस–छंदाणि कस्स?	प्राकृत अपभ्रंश छंद किसके?
उदयचंदस्स रयणा (अप्पगासिद)	उदयचंद के जो (अप्रकाशित हैं)
अलंकार सत्थं	**अलंकार भास्त्र**
अलंकारदप्पणं कस्स।	अलंकार दर्पण किसका?
कोत्थि णो णाणं।	कौन है इसका उल्लेख नहीं।
कोश–गंथाणि	**कोश–ग्रंथ**
पाइयलच्छी णाममाला कस्स?	पाइयलच्छी माला किसकी है?
धणबाल कविस्स रयणां।	धनपाल कवि की रचना है।
देसिणाममाला कस्स रयणा?	देशीनाम माला किसकी रचना है?
हेमचंदसूरि णो रयणा?	हेमचन्द्रसूरि की रचना है।
पाइय–सद्दमहण्णवो कस्स?	पाइय सद्दमहण्णव किसका?
हरगोविंदासस्स।	सेठ हरगोविंदास का
अद्धमागही सद्दकोसो कस्स?	अद्धमागधी शब्द कोश किसका?
रदणचंदमुणिणो रयणा।	रत्नचन्द्र मुनि का।
आगम–सद्द–कोसो कस्स?	आगम शब्द कोश किसका?
वायण पमुह तुलसी।	वाचना प्रमुख तुलसी।
पाइस सद्दकोसो, कुंदकुदसद्दकोसो सक्किद–पागिद–हिंदी–अंग्रेजी सद्दकोसो	प्राकृत शब्दकोश, कुंदकुंदशब्दकोश, संस्कृत–प्राकृत–हिन्दी–अंग्रेजी शब्दकोश,

अभिधाण–राजिंदकोसस्स हिंदी अणुवादो कस्स?	अभिधान राजेन्द्र कोश का हिन्दी अनुवाद किसका है।
उदयचंदस्स कोसो–इगविंस–सदीए पारंभिगसद्दकोसो।	उदयचंद का कोस इक्कीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक शब्द है कोश हैं।

संदर्भ–ग्रंथ

1. अभिनव प्राकृत व्याकरण – लेखक डॉ. नेमिचन्द शास्त्री. प्रकाशक तारा पब्लिकेशन, वाराणसी।
2. अशोक के अभिलेख – लेखक राजबली पाण्डेय, ज्ञान मण्डल लिमिटेड, वाराणसी।
3. आचारांगसूत्र (भाग 1,2) – संपादक–मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति ब्यावर।
4. उत्तराध्ययनसूत्र – संपादक–मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति ब्यावर।
5. गाथा सप्तसती – रचना हाल, अनुवादक डॉ. हरिराम आचार्य, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)
6. जैन आगम साहित्य मनन और मीमांसा – लेखक देवेन्द्रमुनि शास्त्री, तारकगुरू जैन ग्रन्थालय, उदयपुर।
7. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास (भाग–1)– लेखक बेचरदास दोशी, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
8. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास (भाग–4)– लेखक डॉ. मोहनलाल मेहता एवं प्रो. हीरालाल र. कापड़िया, पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान, वाराणसी।
9. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य – परम्परा (खण्ड़–2)– लेखक डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री, ज्योतिषाचार्य, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वतपरिषद्, सागर (मध्यप्रदेश)
10. दशवैकालिक सूत्र – संपादक–मधुकर मुनि, आगम प्रकाशन समिति ब्यावर।
11. नम्मयासुन्दरी कहा – र. महेन्द्रसूरि, सं. डॉ. के.आर. चन्द्र, अ. डॉ. रमणीबाई एम.शाह, पं. रूपेन्द्रकुमार पगारिया, प्राकृत जैन विद्या विकास फण्ड, अहमदाबाद।
12. पाइअ–गज्ज–पज्जसंगहो – डॉ. जिनेन्द्र जैन, जैन अध्ययन एवं सिद्धान्त शोध–संस्थान, जबलपुर।
13. प्रवचनसार – र. आ. कुन्दकुन्द, सं. उपाध्ये, परमश्रुत प्रभावक मण्डल, श्रीमद् राजचन्द्र जैन शास्त्रमाला, अगास।
14. प्राकृत अभ्यास सौरभ – लेखक डॉ. कमलचंद सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर।
15. प्राकृत गद्य–पद्य सौरभ – संपा. एवं अनु. डॉ. कमलचंद सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर।
16. प्राकृत गद्य– सोपान – लेखक एवं संपा. प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)
17. प्राकृत भारती – संपा. एवं अ. प्रो. प्रेमसुमन जैन, डॉ. सुभाष कोठारी, आगम अहिंसा समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर
18. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – लेखक डॉ. पिशल, अ. डॉ. हेमचन्द जोशी, बिहार–राष्ट्रभाषा –परिषद्, पटना।
19.प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास– लेखक डॉ. नेमिचन्द शास्त्री, तारा बुक एजेंसी, वाराणसी।
20. प्राकृत मार्गोपदेशिका – लेखक पं. बेचरदास, जीवराज दोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
21. प्राकृत साहित्य का इतिहास – लेखक डॉ. जगदीसचन्द जैन, चौखम्बा, विद्यावन, वाराणसी।
22. प्राकृत स्वयं शिक्षक – प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्राकृत भारती अकादमी जयपुर।
23. प्रौढ़ अपभ्रंश रचना सौरभ – लेखक डॉ. कमलचन्द्र सोगाणी, अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जयपुर।
24.. भगवती आराधना (भाग–1,2) – र. आ. शिवार्य, सं. एवं अनु. कैलाशचन्द्र शास्त्री, जैन संस्कृति संरक्षक संघ, शोलापुर।
25. वज्जालग्ग में जीवन मूल्य – सं. एवं अनु. डॉ. कमलचन्द सोगाणी, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर।
26. हेम प्राकृत व्याकरण–शिक्षक– लेखक डॉ. उदयचन्द जैन, प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर (राज.)

शब्द कोश –

1.पाइय सद्द महण्णव – लेखक पं. हरगोबिन्ददास त्रिकमचन्द सेठ, प्राकृत ग्रन्थ परिषद् वाराणसी।
2. प्राकृत शब्दकोश भाग–1, 2, उदयचंद जैन, न्यु भारतीय पुस्तक भण्डार दिल्ली।
3. संस्कृत प्राकृत, हिन्दी,अंग्रेजी शब्द कोश, उदयचंद जैन, न्यु भारतीय पुस्तक भण्डार दिल्ली।
4. आगम शब्द कोश वाचना, आचार्य तुलसी
5. प्राकृत शब्द कोश के आर चन्द्रा, अहमदावाद